अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

धर्म प्रभावक आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागरजी महाराज

वीर निर्वाण संवत् - 2550

चैत्र कृष्ण, वि.सं. 2080, मार्च 2024

अंक : सड़सठ

वर्ष : अठारह

अशोकनगर में श्री शांतिनाथ जिनालय में त्रिदिवसीय कार्यक्रम के दौरान आयोजित कार्यक्रम में महामस्तकाभिषेक का पावन दृश्य।

दर्शनोदय तीर्थ थूबोन जी में आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज की मंगल आगवानी में उपस्थित अशोक टिंगू श्रीमान राकेश कांसल, विजय धुर्रा, विपिन सिंघई , आयल मिल आदि।

थूबोन जी में आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में मनाई गई आदिनाथ जयंती का दृश्य।

थूबोन जी के मंदिरों की वंदना के दौरान प्रभु दर्शन करते हुये आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज।

थूबोन जी में सिद्धचक्र महामण्डल विधान के दौरान गुरुदेव का पाद प्रक्षालन करते हुए विधानकर्ता परिवार।

अ.क्षे. थूबोन जी में आयोजित श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान में पधारे अशोकनगर गंज मंदिर कमेटी के सदस्यगण।

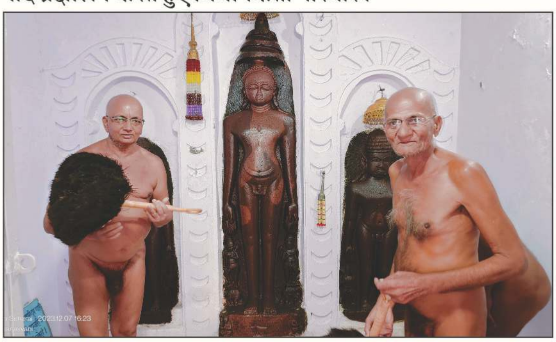

थूबोन जी में मल्लिनाथ जिनालय के दर्शन करते हुये गुरुदेव ससंघ; यह वही जिनालय है जहाँ 1987 में चातुर्मास के काल में ऐलक अवस्था में गुरुवर ने 4 माह वास्तव्य किया था।

चन्देरी में प्राचीन अतिशयकारी प्रतिमाओं के दर्शन करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज।

विषय : धार्मिक पत्रिका | प्रथम प्रकाशन वर्ष : 2007 | भाषा : हिन्दी | प्रारूप : अहिंसा एवं जैन धर्म से संबंधित आलेख

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-अठारह
अंक - सढ़सठ

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्यश्री 108
विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित
आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज।

• परामर्शदाता •
प्राचार्य डॉ. पं. शीतलचंद जैन, जयपुर मो. 9414783707
प्रो. डॉ. ऋषभचंद जैन, एकलव्य यूनिवर्सिटी, दमोह मो.: 9431441951

। सम्पादक ।
डॉ. अजित कुमार जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
मो. : 7222963457, व्हाट्सएपः 9425601161
email : drakjn@aarjavvani.com
bhav.vigyan@gmail.com

• प्रबंध सम्पादक •
इंजीनियर शोभित जैन, एम. टेक.
'आर्जव छाया', पारस नगर, दमोह मो. 8989459635
email : ershobhitjn@aarjavvani.com

• सम्पादक मंडल •
कुलपति **डॉ. वी.के. जैन,** तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, दिल्ली रोड, मुरादाबाद (उ.प्र.) मो.: 9997692191
email : drvkjn@aarjavvani.com

इंजी. बहिन ऋषिका जैन
'आर्जवछाया', पारस नगर, सागर नाका, दमोह (म.प्र.)
email : brrisheekajn@aarjavvani.com

प्रो. डॉ. सुधीर जैन
85, डी के कॉटेज, बावड़ियाकला, भोपाल
email : profdrsudhirjn@aarjavvani.com

पं. जय कुमार 'निशांत'
पपोरा चौराहा, टीकमगढ़
email : ptjaynishant@aarjavvani.com

डॉ. संजय जैन (एडवोकेट)
179, समर्थ सिटी-1, गोम्मटगिरी के पास, इंदौर-459112
email : drsanjayjn@aarjavvani.com

डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी)
गणेश कॉलोनी, नया बाजार, ग्वालियर-474009
email : ·dralpnamodi@aarjavvani.com

इंजी. महेन्द्र कुमार जैन
132, डी के कॉटेज, बावड़ियाकला, भोपाल-462039
email : engmahendrajn@aarjavvani.com

• प्रकाशक •
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद,
भोपाल-462003 मो.: 9479978084
email : sushmajn@aarjavvani.com

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — **पृष्ठ**

1. तीर्थोदय काव्य में सम्यग्दर्शन के विशिष्ट लाभ – अजय कुमार जैन शास्त्री — 2
2. आध्यात्मिक साधना में सम्यक् ध्यान शतक की भूमिका – इंजी. बहिन ऋषिका जैन — 10
3. सिद्ध चक्र महिमा – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज — 15
4. जम्बूस्वामी अष्टक – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज — 17
5. विद्या गुरु विनयांजलि (विद्यांजलि)... – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज — 18
6. विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज — 20
7. जैन- परंपरा-गीत – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज — 21
8. मुनि मूरत के शिल्पी.... – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज — 23
9. विनयाञ्जलि... – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज — 24
10. सदाचार सूक्ति काव्य में पथ्य-अपथ्य विवेचन – डॉ सुकुमाल जैन आयुर्वेद (एम.डी) — 26
11. तीर्थोदय काव्य में निश्चय और व्यवहार कथन – मनोज जैन शास्त्री, सागर — 27
12. तीर्थोदय काव्य में सम्यक्त्व के अभाव में होने वाले आयु के उत्कर्षण – डॉ आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़ — 32
13. समाचार — 37

लेखक एवं उनके विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

तीर्थोदय काव्य में सम्यग्दर्शन के विशिष्ट लाभ

-अजय कुमार जैन शास्त्री, (सिमरिया)

तीर्थोदय काव्य सामान्य परिचय-

''तीर्थोदय काव्य''(सप्त शतक) परम पूज्य आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित पूज्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज द्वारा रचित पद्यात्मक कृति है। तीर्थोदय काव्य का सृजन 1997 के चातुर्मास में तमिलनाडु के कन्नलम् ग्राम में हुआ था, जहाँ राजा के द्वारा निर्मित जिनालय और जिनालय के पीछे पर्वत में स्थित एक प्राचीन विशाल गुफा थी, जिस गुफा का नामकरण प्रस्तुत काव्य रचयिता गुरुवर ने ''ज्ञानातिशय गुहा'' किया, उसी गुफा में इस काव्य का लेखन प्रारंभ हुआ। यह काव्य कन्नलम चातुर्मास की एक विशेष उपलब्धि रही। महाराजजी ने काव्य सृजन के दौरान षोडसकारण पर्व में 32 दिन तक एक आहार एक उपवास करके विशुद्धि पूर्वक ग्रन्थ रचना की। इस काव्य में 06 सोपान, 90 उपशीर्षक एवं 704 हिंदी पद्यों के माध्यम से आचार्य श्री ने ज्ञान रूपी 'गागर में सागर' भर दिया है, यह देखने में लघुकाव्य है किन्तु यह काव्य सृजन अद्वितीय है।

सम्पूर्ण काव्य में ज्ञानोदय छंद के 613 एवं 91 छंद में कुल 704 पद्य निबद्ध हैं। ज्ञानोदय छंद में चार पंक्तियाँ होती हैं इसके प्रथम चरण में 16 मात्राएँ, व द्वितीय चरण में 14 मात्राएँ होती हैं। महाराज जी द्वारा प्रत्येक भावना के अंत में दो-दो दोहों के साथ मुरज बन्ध बनाया गया है, इस काव्य में कुल 34 मुरजबन्ध रचित हैं।

आचार्यश्री ने विषयवस्तु को 'मुक्तिपथ के छह सोपान' शीर्षक में विभक्त कर यह स्पष्ट कर दिया है कि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र के साथ की गयी सद्भक्ति से तीर्थसमुन्नति अर्थात् तीर्थंकर पद की प्राप्ति हो जाती है। इस काव्य तीर्थंकर पद प्राप्ति का मार्ग दर्शायक है, इसमें मुख्यतया सोलह कारण भावनाओं का वर्णन किया गया है जो तीर्थंकर पद प्रदायक है अतः इस काव्य का नामकरण ''तीर्थोदय''सार्थक है। आचार्य आर्जवसागरजी महाराज के गुरु के गुरु (दादागुरु) परम पूज्य महाकवि आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज द्वारा रचित कृतियों के नामकरण 'उदय' शब्द का प्रयोग किया गया है। जयोदय, भद्रोदय, वीरोदय (महाकाव्य त्रय) सुदर्शनोदय, भद्रोदय (चरित्रकाव्य) यह संस्कृत भाषा में रचित हैं। विवेकोदय, भाग्योदय यह हिंदी भाषा में लिखित हैं।

साथ ही आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से संस्थापित तीर्थ / जिनालयों / संस्थाओं / गौशाला आदि के नामकरण में 'उदय' शब्द का प्रयोग किया गया है। दयोदय, भाग्योदय आदि। इसी क्रम में यह भी कह सकते हैं कि आचार्यश्री आर्जवसागर जी महारज ने इस काव्य के नामकरण हेतु अपनी गुरु परंपरा को रक्षित, पोषित और वर्धित किया हो। आचार्यश्री ने स्वयं तीर्थोदय शब्द की व्युत्पत्ति को काव्य मय उल्लेख किया है-

''तारक है जो भव्यजनों का, द्वादशांग शुभ तीर्थ रहा।
तीर्थंकर से होता उद्गम, गाता आगम गीत रहा॥

सदा भावना षोडसकरण, भाते तीर्थंकर बनते।
तीर्थोदय है जिनसे होता, हित करते शिवसुख वरते॥''

तीर्थोदय काव्य में अनुयोगों (प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग) को समाहित किया गया है।

इस काव्य में जैनदर्शन के अनेकानेक ग्रन्थों का सार काव्यात्मक प्रस्तुत किया गया है। काव्य की भाषा सरल, मधुर, रसालंकारमयी है।

सम्यग्दर्शन की परिभाषा-

समयसार में आचार्य कुंद-कुंद स्वामी ने सम्यग्दर्शन का स्वरूप बतलाते हुये लिखा है-

भूतार्थ से जाने हुये जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष ये नवतत्व ही सम्यक्त्व हैं।[4]

नियमसार ग्रन्थ में सम्यग्दर्शन का लक्षण-

आप्त, आगम और तत्त्व, इनका श्रद्धान करना, इनमें रुचि, प्रतीति और विश्वास रखना ही सम्यग्दर्शन है। यह व्यवहार सम्यक्त्व का कथन है। इसके आधार से निश्चयनय से अपनी शुद्ध-बुद्ध परमानंदमय परमात्मा में रुचिरूप श्रद्धान होना निश्चयसम्यक्त्व है। यह साध्य है और व्यवहारसम्यक्त्व साधन है। इसीलिए यहाँ आचार्यदेव ने पहले व्यवहार सम्यक्त्व का स्वरूप कहा है।[5]

रयणसार ग्रंथ में सम्यग्दर्शन का लक्षण[6]

जो व्यक्ति निश्चय से अतीत काल में सर्वज्ञ के द्वारा कहे हुए तथा गणधरों से विस्तृत एवं पूर्वाचार्यों के क्रम से प्राप्त वचनों को ज्यों का त्यों कहता है वह सम्यग्दृष्टि है।

तत्त्वार्थसूत्र में श्री उमास्वामी आचार्य ने सम्यग्दर्शन का लक्षण लिखा है-

''तत्त्वार्थ अर्थात् तत्त्व और पदार्थों के यथावत् स्वरूप की श्रद्धा या रुचि को सम्यग्दर्शन कहते हैं[7]। आप्त (सत्यार्थ देव) आगम (शास्त्र) और तत्त्वों का शंकादि (पच्चीस) दोष-रहित जो अतिनिर्मल श्रद्धान होता है, उसे सम्यक्त्व जानना चाहिए॥6॥[8]''

सम्यग्दर्शन का स्वरूप आचार्यश्री समन्तभद्र स्वामी ने जैसा रत्नकरण्डक श्रावकाचार में वर्णित किया वैसा ही तीर्थोदय काव्य के 19 वें पद्य में आचार्यश्री आर्जवसागर जी ने तीर्थोदय काव्य में बतलाया है-

जो भविजन वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु पर सच्चा श्रद्धान, तीन मूढ़ताओं और षट् अनायतन को त्यागकर, अपूर्व गुणों और छवि को प्राप्त करता है, आठ मदों को छोड़कर, आठों अंगों के साथ, प्रशम आदि गुणों को धारण करता है, वह भविक जीव सम्यक्दृष्टि बनकर शीघ्र ही मोक्ष को प्राप्त करता है।[1]

सच्चे देव, शास्त्र और सच्चे गुरु का श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है। यह आठ अंग से सहित होता है तथा इन अंगों के विपरीत शंकादि आठ दोष, आठ मद, छह अनायतन और तीन मूढ़ता इन पच्चीस दोषों से रहित होता है अथवा छह द्रव्य, पांच अस्तिकाय, सात तत्त्व और नव पदार्थ इनका श्रद्धान करना भी सम्यग्दर्शन है।

सम्यग्दर्शन के आठ अंग हैं-

(1)निःशंकित (2)निःकांक्षित (3) निर्विचिकित्सा (4) अमूढ़दृष्टि (5)उपगूहन (6)स्थितिकरण (7) वात्सल्य और (8) प्रभावना

इन आठ अंगों में से यदि एक भी अंग नहीं हो तो वह सम्यग्दर्शन संसार परम्परा का नाश नहीं कर सकता, जैसे- एक अक्षर से भी हीन मंत्र विष को दूर नहीं कर सकता।

निमयसार की गाथा 5 में आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा है-

(तत्त्व का अर्थ स्वरूप होता है, अतः इसका तात्पर्य है आप्त, आगम के स्वरूपों पर श्रद्धान करने से सम्यग्दर्शन होता है।)[2]

सम्यग्दर्शन के लाभ-

नगर में जिस प्रकार द्वार प्रधान होता है, मुख में जिस प्रकार चक्षु प्रधान है तथा वृक्ष में जिस प्रकार मूल प्रधान है, उसी प्रकार ज्ञान, चारित्र में वीर्य व तप इन चार आराधनाओं में एक सम्यक्त्व ही प्रधान है।[3]

दर्शन भ्रष्ट ही वास्तव में भ्रष्ट है क्योंकि दर्शन भ्रष्ट को निर्वाण नहीं होता, चारित्र भ्रष्ट को मोक्ष हो सकता है किन्तु पर दर्शन भ्रष्ट को नहीं। दर्शन भ्रष्ट ही भ्रष्ट है चारित्रभ्रष्ट वास्तव में भ्रष्ट नहीं होता। क्योंकि, जिसका सम्यक्त्व नहीं छूटा है ऐसा चारित्रभ्रष्ट संसार में पतन नहीं करता।

भगवती आराधना की 735 गाथा में कहा गया है कि-

सम्यग्दर्शन सर्व दुःखों का नाश करने वाला है अतः इसमें प्रमादी मत बनो।

सम्यक्त्व को आचरण करने वाले धीर पुरुष संख्यात व असंख्यातगुणी कर्मनिर्जरा करते हैं, तथा संसारी जीवों की मर्यादा रूप सर्व दुःख है उनका नाश करते हैं। (गाथा 20 चारित्र पाहुड)

दर्शन पाहुड में गाथा 21 में कहा गया है कि जिनप्रणीत सम्यग्दर्शन को अंतरंग भावों से धारण करो, क्योंकि यह सर्व गुणों में और रत्नत्रय में सार है तथा मोक्षमन्दिर की प्रथम सीढ़ी है।

जिस प्रकार भाग्यशाली मनुष्य कामधेनु, कल्पवृक्ष, चिंतामणिरत्न और रसायन को प्राप्त कर मनोवांछित उत्तम सुख को प्राप्त होता है, उसी प्रकार सम्यग्दर्शन से भव्य जीवों को सर्व प्रकार के सर्वोत्कृष्ट सुख व समस्त प्रकार के भोगोपभोग स्वयमेव प्राप्त होते हैं। (गाथा 54 रयणसार)

सम्यग्दर्शन को यह जीव जब प्राप्त हो जाता है तब परम सुखी हो जाता है और जब तक उसे प्राप्त नहीं करता तब तक दुःखी बना रहता है। (गाथा 158 रयणसार)

रत्नकरण्डक श्रावकाचार के श्लोक क्रमांक 34 में आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने लिखा है- तीनकाल और तीन जगत् में जीवों को सम्यक्त्व के समान कुछ भी कल्याणकारी नहीं है और मिथ्यात्व के समान अकल्याणकारी नहीं है।

रत्नकरण्डक श्रावकाचार के श्लोक क्रमांक 36 में आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने लिखा है- शुद्ध सम्यक्दृष्टि जीव कान्ति, प्रताप, विद्या, वीर्य, यशोवृद्धि, विजय, वैभववान, उच्चकुलीन, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के साधक तथा मनुष्यों में शिरोमणि होते हैं।

तीर्थोदय काव्य में सम्यग्दर्शन के विशिष्ट लाभ-

सम्यक्त्व के साथ ही तीर्थंकर पद प्राप्त किया जा सकता है। जिनेन्द्र भगवान में भक्ति रखने वाला सम्यग्दृष्टि भव्य मनुष्य, अपरिमित महिमा से युक्त इंद्र समूह की महिमा को, राजाओं के मस्तक से पूजनीय चक्रवर्ती के चक्ररत्न को और समस्त लोकों में सर्वोच्च तीर्थंकर के पद को प्राप्त कर निर्वाण को प्राप्त करता है। (पद्य-15) मोक्ष मार्ग का प्रथम सोपान अथवा सीढ़ी सम्यग्दर्शन ही है। (पद्य-21)

सम्यग्दृष्टि जीव, पहले नरक के अतिरिक्त, शेष छह नरकों में, ज्योतिषी देवों में, व्यंतर देवों में, भवनवासी देवो में, नपुंसकों में, (नारी) स्त्रियाँ में, पाँच स्थावरों में, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवों में तथा कर्मभूमि के पशुओं में उत्पन्न नहीं होता।

तीनलोक तीन काल में सम्यग्दर्शन के समान सुखदायक अन्य कुछ नहीं है। यह सम्यग्दर्शन ही समस्त धर्मों का मूल है इस सम्यग्दर्शन के बिना समस्त क्रियाएँ दुःख दायक हैं। (पद्य-22)

सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र नहीं होता है। जिस प्रकार बीज के अभाव में वृक्ष की उत्पत्ति, स्थिति, वृद्धि और फल की प्राप्ति नहीं होती उसी प्रकार सम्यग्दर्शन के अभाव में सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की उत्पत्ति, वृद्धि और फल की प्राप्ति नहीं होती है। (पद्य-23)

सम्यग्दर्शन के अभाव में सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र नहीं होता है और तीनों के अभाव में मोक्षमहल की प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः मोक्षमहल का प्रथम सोपान सम्यग्दर्शन ही है। (पद्य-23)

सम्यग्दृष्टि जीव त्रिमूढ़ता (लोकमूढ़ता, देवमूढ़ता, गुरुमूढ़ता) से रहित होता है।
काव्य 31-33 में लोकमूढ़ता का विस्तृत वर्णन तीर्थोदय काव्य में किया गया है, काव्य 34 में देवमूढ़ता का वर्णन है, एवं गुरुमूढ़ता का वर्णन 36-37 काव्यों में किया गया है।
सम्यग्दृष्टि जीव के षट् अनायतनों का त्याग होता है। (पद्य 38-46)
(षट् अनायतन कुगुरु, कुदेव, कुशास्त्र, कुगुरु सेवक, कुदेव सेवक, कुशास्त्र सेवक)
गृह, धन, वैभव त्यागी सम्यग्दृष्टि जीव देवताओं द्वारा भी वंदित होता है। (पद्य-49)
सम्यग्दृष्टि जीव किसी भी परिस्थिति में मिथ्यात्व का पोषण नहीं करता है, वह सदैव मिथ्यात्व का त्यागी होता है। (पद्य-56)

सम्यग्दृष्टि जीव सदैव पुरुषार्थरत रहता है वह निरंतर मोक्षमार्ग पर चलते हुए मोक्षमहल की प्राप्ति हेतु पुरुषार्थ करता रहता है। (पद्य-57)

सम्यग्दृष्टि जीव कभी भी सरागी को नहीं भजता, इसका उदाहरण, आचार्य समन्तभद्र स्वामी हैं। (पद्य-59)

सम्यग्दृष्टि जीव पंचपरमेष्ठी की शरण में जाता है तथा सरागी की शरण को त्यागकर, विरागी गुरुओं को पूजता है, भय, आशा, स्नेह, लोभादि के वशीभूत होकर अनायतनों को नहीं पूजता, मिथ्यामार्ग को त्यागकर सन्मार्ग रूपी रत्नत्रय का सेवन करता है। (पद्य-60)

भव्य जीव निरंतर सम्यग्दर्शन की विशुद्धि को बढ़ाते हुए पंच प्रकार के मिथ्यात्वों को छोड़ता है (पंच मिथ्यात्व-एकांत, विपरीत, संशय, विनय, अज्ञान) पद्य-61

तीर्थोदय काव्य में पद्य 61 से 70 तक पूज्य आचार्यश्री ने पंच मिथ्यात्व के लक्षण का उदाहरण सहित वर्णन किया है।

सम्यग्दर्शन संसार के आवागमन को हरण करने वाला होता है। सम्यक्त्व का धारी जीव अष्ट अंगों से सुशोभित होता है। सम्यग्दर्शन के अष्ट अंग हैं-

1. **निःशंकित अंग**- अर्थात् सम्यग्दृष्टि जीव जिनधर्म, जिनागम, तत्त्व, पदार्थादि में किसी भी प्रकार की शंका नहीं करता सिर्फ श्रद्धान करता है। **जैसे**- अंजन चोर ने णमोकार महामंत्र पर श्रद्धान किया और उसे नभ विद्या सिद्ध हो गयी, जब एक मंत्र की इतनी महिमा हो सकती है तो तप की महिमा तो अवर्णनीय होगी।

2.**निःकांक्षित अंग**- आकांक्षा अथवा इच्छा से रहित होना, धर्म में स्वार्थ भावना का त्याग होना ही निःकांक्षित अंग है। लक्ष्य मोक्ष है तो स्वर्गादिक तो वैसे ही प्राप्त हो सकते हैं जैसे- लक्ष्य धान्य होने पर भूसा (घास) स्वयमेव प्राप्त हो जाते हैं। **जैसे**- अनन्तमती के बचपन में ही ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया और बिना कांक्षा के उसका हर परिस्थिति में पालन किया और अंत में सारी इच्छाओं को त्यागकर आर्यिका का पद धारण किया और स्वर्ग में पद प्राप्त किया।

3.**निर्विचिकित्सा अंग**- सम्यग्दृष्टि जीव साधु के मलिन शरीर को देखकर घृणा नहीं करता। जैसे योद्धा रणभूमि कें तलवार से युद्ध करता है वही काम आती है भले ही स्थान अमूल्य क्यों न हो वह निष्प्रयोजन ही होती है। **जैसे**- राजा उद्दायन की देवों ने कुष्ट रोग से गलित साधु के भेष में आकर परीक्षा ली थी।

4.**अमूढ़दृष्टि अंग**- कुदेव, कुगुरु, कुशास्त्र में अथवा छह अनायतनों में श्रद्धा न रखे। उदाहरण- रेवती रानी के सम्यक्त्व की परीक्षा लेने हेतु क्षुल्लक चन्द्रप्रभु ने मायामय रूप बनाकर चमत्कार दिखाया था जिसने माया द्वारा पूर्व दिशा में ब्रह्मा, दक्षिण में नारायण, पश्चिम दिशा में रुद्र और उत्तर दिशा में तीर्थंकर का स्वरूप दिखाया लेकिन उसने विचार किया कि भरत क्षेत्र में चतुर्थकाल में 24 ही तीर्थंकर होते हैं इत्यादिक विचार करके सम्यग्दर्शन में दोष नहीं लगाया, बाद में गुप्ताचार्य मुनिवर का आशीष पा देवगति को प्राप्त किया।

5. **उपगूहन अंग**- जिन धर्म की निंदा न करते हुए श्रावक मुनि के दोषों को ढांकना और उनका निवारण करना। जैसे- ताम्रलिप्त नगरी में जिनेन्द्र भक्त सेठ के घर भगवान पार्श्वनाथ के सर पर वैडूर्यमणि से युक्त छत्र था। सूर्य नामक चोर क्षुल्लक बनकर उनके घर आया, छत्र चुराकर क्षुल्लक भागने लगा कोतवाल ने उसे पकड़ लिया, चोर सेठ की शरण में गया, सेठ ने धर्म का उपहास न हो यह विचार कर, कोतवाल से कहा इसे मैंने ही मणि लाने भेजा था।

अतः सम्यग्दृष्टि जीव को धर्म के दोषों का आच्छादन करना चाहिए।

6. **स्थितिकरण अंग**- दर्शन या चारित्रमोह के वशीभूत होकर जो मिथ्यादृष्टि होते हैं उनको सत्पथ पर लगाते हैं, अथवा उनकी भूल सुधार कराने में सम्यग्दृष्टि सहयोगी होते हैं।

सदा पाप से घृणा करो तुम, पापी से नहीं घृणा करो।
पापी इक दिन पाप तजे फिर, पूजित बनता यहाँ अहो।

धमी के बिन धर्म रहे क्या? अतः दोष उपचार करो।
अपने व्रत, पद की रक्षा सह, सदा सभी उपकार करो॥ पद्य106॥

उदाहरण– गुरु वारिषेण का उपकार
वारिषेण गुरु, पुष्पडाल को कैसे् मार्ग दिखाते हैं।
प्रथम साधुपद ग्रहण करा कब? समवशरण ले जाते हैं।
समवशरण में पुष्पडाल को, गृह का राग सताता है।
गुरु का इसका क्या उपाय करते? यहाँ बताया जाता है।

7. वात्सल्य अंग– रत्नत्रयमय सहधर्मी जन, स्वपर स्नेह सदा करते।
नहीं कपट रख, सहज भाव से, यथा योग्य आदर करते।
धर्मी जन के सम्मुख जाना, हाथ जोड़ना मिष्ट वचन–
कहना, सेवा करना उनको और समझाना निजी स्वजन।
जैसे माता जन्मे शिशु को, गोद में रख सहलाती है।
गले लगाती गो बछड़े को, उत्तम दुग्ध पिलाती है।
मर्यादा रख धर्मी जन सब, करें अकृत्रिम नेह सदा।
वात्सल्य से सुख दुःख बाँटे, चल हिल–मिल शिवराह सदा।

उदाहरण– विष्णु कुमार मुनि ने अकंपनाचार्य आदि 700 मुनियों की रक्षा की।

8. प्रभावना अंग– जिनधर्मी जिन–मग में निशदिन, सम्यक् पथ दर्शाता है।
मिथ्यातम का खंडन करता, शिव सुख मार्ग दिखाता है।
दान, तपों, अरू जिन–पूजा का, अतिशय जो बतलाता है।
ज्ञान, चारित नवकार मंत्र से, जिन महिमा दर्शाता है।

पद्य 71 से 127 तक सम्यग्दर्शन के अष्ट अंगों के लक्षण और उदाहरणों को आचार्यश्री आर्जवसागर जी ने तीर्थोदय काव्य में सटीक रूप से प्रस्तुत किया है।

मोक्षमार्ग का खेवटिया या कर्णधार सम्यग्दर्शन ही है क्योंकि ज्ञान और चारित्र की अपेक्षा सम्यग्दर्शन श्रेष्ठता को प्राप्त होता है।

यदि सम्यग्दर्शन प्राप्त होने के पूर्व किसी मनुष्य ने नरक आयु का बंध कर लिया तो भोगभूमि का तिर्यंच और मनुष्य होता है।

यदि सम्यग्दर्शन प्राप्त होने के पहले देवायु का बन्ध कर लिया है तो वैमानिक देव ही होता है। भवनत्रिकों में उत्पन्न नहीं होता।

सम्यग्दर्शन के काल में यदि मनुष्यों और तिर्यंचों को आयु बन्ध होता है तो नियम से देवायु का बंध होता है।

सम्यग्दृष्टि मनुष्य यदि स्वर्ग जाते हैं तो वहाँ अणिमा आदि आठ गुणों की पुष्टि से संतुष्ट तथा सातिशय शोभा से युक्त होते हुये देवांगनाओं के समूह में चिरकाल तक क्रीड़ा करते हैं।

सम्यग्दृष्टि जीव स्वर्ग से आकर नौ निधि और चौदह रत्नों के स्वामी समस्त भूखंड के अधिपति, तथा मुकुटबद्ध राजाओं से वंदित होते हुए सुदर्शन चक्र को वर्ताने में सक्षम होते हैं अथवा चक्रवर्ती होते हैं।

सम्यग्दर्शन के द्वारा पदार्थों का ठीक ठीक निश्चय करने वाले पुरुष अमरेन्द्र, असुरेन्द्र, नरेन्द्र, मुनीन्द्रों द्वारा स्तुतचरण, लोक के शरणभूत तीर्थंकर होते हैं।

सम्यग्दृष्टि जीव अंत में उस मोक्षमहल में विराजते हैं जो जन्म, जरा, मृत्यु, से रहित है, रोग-शोक, भयादि से रहित है।

आगम प्रमाण-

1. ‘श्रद्धानंपरमार्थनां आप्तामगमतपोभृताम्।
त्रिमूढ़ापोढ़मष्टांगं सम्यग्दर्शनमस्मयम्’’॥4॥र.श्रा.
2. ‘‘अत्तागमतच्चाणं सद्दहणादो हवेइ सम्मत्तं’’
3. णगरस्स जह दुवारं मुहस्स चक्खू तरुस्स जह मूलं।
तह जाण सुसम्मतं णाणचरणवीरियतवाणं॥736॥भ.आ.
दंसणभट्टो भट्टो दंसणभट्टस्स णत्थि णिव्वाणं।
सिज्झंति चरियभट्टा दंसणभट्टा ण सिज्झंति॥738॥भ.आ.
दंसणभट्टो भट्टो ण हु भट्टो होइ चरण भट्टो हु।
दंसणममुयतस्स हु परिवडणं णत्थि संसारे॥739॥भ.आ.
4. भूयत्थेणाभिगदा जीवाजीवा य पुण्णपावं च।
आसवसंवरणिज्जर बंधो मोक्खो य सम्मत्तं॥13॥समयसार
5. अत्तागमतच्चाणं सद्दहणादो हवेइ सम्मत्तं।
ववगयअसेसदोसो सयलगुणप्पा हवे अतो॥5॥नियमसार
6. पुव्वं जिणेहिं भणियं जहट्ठियं गणहरेहिं वित्थरियं।
पुव्वाइरियक्कमजं तं बोल्लई सो हु सद्दिट्ठी॥॥रयणसार
7. ‘‘तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्’’॥2॥तत्त्वार्थसूत्र
8. ‘‘अत्तागमतच्चाणं जं सद्दहणं सुणिम्मलं होई।
संकाइदोसरहियं तं सम्मत्तं मुणेयव्वं’’॥6॥पंचास्तिकाय (गाथा 17)
‘‘प्रथम नरक बिन षट् भू ज्योतिष वान भवन षंड नारी।
थावर विकलत्रय पशु में नहिं, उपजत सम्यक् धारी॥
9. तीन लोक तिहुंकाल महिं नहिं, दर्शन सो सुखकारी।
सकल धर्म को मूल यही, इस बिन करनी दुःखकारी’’॥16॥छहढाला
सम्यग्दर्शनशुद्धा नारकतिर्यङ्नपुंकस्त्रीत्वानि।
दुष्कुलविकृताल्पायुर्दरिद्रतां च व्रजन्ति नाप्यव्रतिकाः॥35॥र.श्रा.

ओजस्तेजोविद्यावीर्ययशोवृद्धिविजयविभवसनाथाः।
माहाकुला महार्था मानवतिलका भवन्ति दर्शन पूताः॥॥र.श्रा.
अष्टगुणपुष्टितुष्टा दृष्टि विशिष्टाः प्रकृष्टशोभाजुष्टाः।
अमराप्सरसां परिषदि चिरं रमन्ते जिनेन्द्रभक्ताः स्वर्गे॥37॥र.श्रा.
नवनिधि सप्तद्वयरत्नाधीशाः सर्वभूमिपतयश्चक्रम्।
वर्तयितुं प्रभवन्ति स्पष्टदृशः क्षत्रमौलिशेखरचरणाः॥38॥र.श्रा.
अमरासुरनरपतिभिर्यमधरपतिभिश्च नूतपादाम्भोजाः।
दृष्टया सुनिश्चितार्था वृषचक्रधरा भवन्ति लोकशरण्याः॥39॥र.श्रा.
शिवमजरमरुजमक्षयमव्याबाधंविशोकभयशंकम्।
काष्ठागतसुखविद्याविभवं विमलं भजन्ति दर्शनशरणाः॥40॥र.श्रा.
देवेन्द्रचक्रमहिमानममेयमानम्
राजेन्द्रचक्रमवनीन्द्रशिरोर्चनीयम्।
धर्मेन्द्रचक्रमधरीकृतसर्वलोकम्।
लब्ध्या शिवं च जिनभक्तिरुपैति भव्यः॥41॥र.श्रा.
''देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
येहु मान समकित को कारण, अष्ट-अंग-जुत धारो''॥10॥छहढाला
यह सद्दर्शन सदा शरण है, समीचीन शिवपथ दर्शन।
सौख्य सुदाता सम्यग्दर्शन, परम पूज्य है शुभ दर्शन।
मणि सम्यक्त्व व समकित धन है, शिवदाता है जिनदर्शन।
मार्ग-सुदर्शी, धर्म-दृष्टि है, मंगल पथ है समदर्शन॥73॥तीर्थोदय काव्य

भाव विज्ञान पत्रिका हेतु

● आजीवन सदस्यता शुल्क ●

सम्मानीय संरक्षक	: 11,000	संरक्षक	: 5,100,
विशेष सदस्य	: 3,100	आजीवन सदस्यता	: 2,100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

सम्यक् ध्यान शतक विद्वत् संगोष्ठी

आध्यात्मिक साधना में सम्यक् ध्यान शतक की भूमिका

इंजी. बहिन ऋषिका जैन, दमोह

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज दिगम्बर जैन आचार्यों कें से एक है। इन्हें इनकी विद्वत्ता, सरलता, तपस्या के लिये पहचाना जाता है। आचार्यश्रीजी लम्बे समय तक ध्यान लगाने के लिये भी जाने जाते हैं। हालांकि आचार्यश्री जी की काया मध्यप्रदेश में जन्मी, लेकिन इन्होंने तमिल, कन्नड़, मराठी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर अनेकों रचनाएँ की। उसका कारण इन सभी भाषाओं में स्वाध्याय चिंतन मनन का परिणाम है। गुरुदेव ने अनेक आगमिक ग्रन्थों के पद्यानुवाद के साथ-साथ अनेक शतकों की रचना की जिनमें ध्यान (मेडीटेशन) पर आधारित शतक- ''सम्यक् ध्यान शतक'' है। उक्त रचना पर अनेक शोधार्थी पीएचडी की तैयारी भी कर रहे हैं। इस कृति में 113 पद्यों के माध्यम से ध्यान के संपूर्ण विषय का समावेश किया गया है। जैन परंपरा में ध्यान का एक विशिष्ट एवं उच्च स्थान है। जैन आगम के मुख्य ग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र (मोक्षशास्त्र), ज्ञानार्णव, समाधितंत्र, इष्टोपदेश, योगसारप्राभृत, ध्यान शतक, आदि अनेक ग्रन्थों में ध्यान का विशद एवं विस्तृत वर्णन है। जिनके विषय का समावेश सम्यक् ध्यान शतक कृति में किया गया है। भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से भी 'सम्यक् ध्यान शतक' यह कृति प्रकाशित हो चुकी है।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की लेखनी से रची गई यह 'सम्यक् ध्यान शतक' कृति अध्यात्म में ध्यान के स्वरूप को जानने के लिये अनूठी कृति है। इसमें ध्यान पर आधारित संपूर्ण विषय का बहुत ही कम शब्दों में पद्य रूप में विशेष वर्णन किया गया है। ''सम्यक् ध्यान'' का अर्थ है कि 'सम्यक्'- भली भांति से 'ध्यान' अर्थात् एकाग्र स्वरूप चिंतन। मतलब पूरी तरह से चित्त की एकाग्रता अथवा भली-भाँति से किसी तत्त्व रूप विषय या आत्म स्वरूप चिंतन करना सम्यक्ध्यान है। एतदर्थ ''सम्यक् ध्यान शतक'' ऐसी कृति है जिसमें संपूर्ण रूप से चित्त को एकाग्र करने का उपाय लगभग सभी पद्यों में बताया गया है। चूँकि यह कृति ऐसे महान तपस्वी संत के द्वारा लिखी गई है अतएव इसमें उनके तप, त्याग, वैराग्य, चर्या, ज्ञान और ध्यान का अनुभव भी दोहों में साकार हुआ है। 'सम्यक् ध्यान शतक' में कलापक्ष और भावपक्ष की उपयुक्तता के साथ-साथ आध्यात्मिक रस की अनुभूति भी प्रत्येक काव्य में समायी हुई है। जिस तरह मंत्र तो बहुत छोटा होता है लेकिन उसका प्रभाव असीमित होता है। उसी तरह गुरुदेव रचित इस कृति में वह सब कुछ आ गया, जो ध्यान के लिये वर्तमान में जरूरी है। यथा-

''इक सौ तेरा पद्य हैं, 'ध्यान शतक' में पूर्ण।
ध्यान करे निज-एक सो, तेरा है सम्पूर्ण॥''

गुरुदेव ने कृति में लिखा है कि- जो एक (आत्मा) है वह ही तेरा है। क्योंकि आत्मध्यान से ही संपूर्णता अर्थात् सिद्ध पद की प्राप्ति होती है। देखिए! इस पद्य के माध्यम से ही जीवन का संपूर्ण सार बता दिया।

इस कृति का आद्योपान्त एक-एक अक्षर ध्यान से पढ़ेंगे तो बड़ा ही आनंद मिलेगा और योगी बन आत्मानुभूति का सुख भी प्राप्त होगा। ध्यान के संबंध में पद्य रूप में इतनी सुंदर विवेचना मुझे अन्यत्र कहीं नहीं मिली। यह विवेचना सारगम्य ओर आत्मसात् करने के योग्य है। जिस ध्यान के माध्यम से आत्मा; परमात्मा बनती है उस ध्यान के लिये तत्त्वज्ञान का अध्ययन भी इस कृति के माध्यम से कर सकते हैं। यह कृति ध्यान के लिये बहुत ही सरल; कुँजी के समान है। जो मोक्ष प्राप्ति में मूल कारण है। ध्यान (मेडीटेशन) क्या है? इसके लिये आचार्य उमास्वामी अपने महान ग्रंथ तत्त्वार्थ सूत्र के नवम् अध्याय में निर्जरा तत्त्व के अंतर्गत सूत्र 20[1] में अभ्यन्तर तपों में ध्यान का वर्णन करते हैं। वे कहते हैं कि चित्त की चंचलता को दूर करना ही ध्यान है। इसी अध्याय के सूत्र संख्या 27 से लेकर 44 तक में जो ध्यान का उल्लेख मिला है वैसा उल्लेख अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। ध्यान की परिभाषा बताते हुये सूत्र 27[2] में वर्णित है कि उत्तम संहनन के धारक मनुष्य का अपने चित्त की वृत्ति को सब ओर से रोककर एक ही विषय में लगाना ध्यान है।

इस सूत्र में तीन बातें बतायीं है- ध्याता, ध्यान का स्वरूप और ध्यान का काल। मतलब उत्तम संहनन का धारी मनुष्य ध्याता हो सकता है। एक पदार्थ को लेकर उसी में अपने चित्त को स्थिर कर देना ध्यान है। उस ध्यान का काल अंतर्मुहूर्त्त है।

उपनिषद् में भी यही बात अन्य तरीके से कहते हैं कि जिस प्रकार तिल में तेल, दही में घी एवं अरणियों में अग्नि छिपी रहती है उसी प्रकार हमारी आत्मा में परमात्मा छिपे हुये हैं। लेकिन वह परमात्मा तब ही प्राप्त होंगे जब संयमरूपी तप-त्याग के द्वारा विषयों से विरक्त होकर उनका ध्यान करेंगे। श्रीमद् भगवद्गीता के नौवे योग में भी ध्यान का वर्णन किया है।[4]

महाभारत में भी बतलाया है कि जीव को सर्वप्रथम अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करके मन को एकाग्र करना चाहिए। क्योंकि इन्द्रियाँ चंचल, अस्थिर तथा अनेक प्रकार की कषायों की जड़ होती हैं।[5] इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् मन को स्थिर रखें फिर पाँचों इन्द्रियों सहित मन को ध्यान में एकाग्र करें।[6] त्रियोग प्रवृत्ति को रोकना ही ध्यान है।[7]

1. प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्त्य-स्वाध्याय-न्युत्सर्ग ध्याना-न्युत्तरम्। (त.सू.सूत्र- संख्या 9/20)
2. उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्ता निरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्त्तात्। (त.सू. सूत्र संख्या-9/27)
3. तिलेषु तैलम् दधनीव सर्पिराय: स्तोत्र: स्वरणीषु चाग्नि:।
   एवमात्माङऽमनि गृहयते असौ, सत्येनैनं तपसा योऽनुपश्यति॥ (श्वेताश्वतरोपनिषद् 1/15)
4. श्रीमद् भगवत् गीता।
5. महाभारत, अनुशासन पर्व, 66/28-30
6. एवमिन्द्रिय ग्रामं शनैः सम्परिभावयेत्
   संहरेत कमश्चैव स सम्यक् प्रामिष्यति॥ (शांतिपर्व 185/19)
7. योगश्चित्तवृत्ति निरोधः। (पातञ्जलियोग सूत्र)
   कायवाङ्मनः कर्म योगः। (तत्त्वार्थ सूत्र 6/1)

कविताओं की तरह रम्य और सरल व्यक्तित्व के धनी आचार्यश्री आर्जवसागरजी भौतिक कोलाहलों से दूर, राग-द्वेष मोह आदि से दूर इन्द्रियजित्, नदी की तरह प्रवाहमान, व्यक्तित्व में सरलता, वाणी में ऋजुता के धनी महान तपस्वी आचार्य हैं। आपने अनेक ग्रंथों का पद्यानुवाद कर अध्यात्म पिपासुओं को अमृत उपलब्ध कराया है। श्रम और अनुशासन, विनय और संयम, तप और त्याग की अग्नि में तपी आपकी साधना, गुरु सूत्रों पालन, सबके प्रति समता की दृष्टि एवं समस्त जीवों के कल्याण की भावना आपके अंतरंग में सदा विद्यमान रहती है। आचार्यश्री जी की सभी कृतियाँ बेजोड़ हैं; जिनमें यथार्थ की अभिव्यक्ति दर्शन एवं अध्यात्म के माध्यम से की गई है। आपकी रचनाओं का ऐसा प्रभाव है; जिससे व्यक्ति, समाज, और राष्ट्र सभी एकता के सूत्र में बँध सकते हैं।'सम्यक् ध्यान शतक' कृति ऐसी रचना है; जो व्यक्ति के अंदर ध्यान की लहरें, कर्त्तव्य की भावना और पुरुषार्थ के द्वारा मोक्ष प्राप्ति का साधन उत्पन्न करा देती है।

जैन साहित्य में 'ध्यान' का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। संसार के सभी प्राणी सुख के अभिलाषी होते हैं और दुःख को कोई भी नहीं चाहता। परंतु वह उत्तम सुख क्या है? कहाँ है? तथा उसकी प्राप्ति के उपाय क्या हैं? इन सबका विवेक अधिकांश लोगों को नहीं रहता है। अज्ञानी प्राणी; जिसे सुख मानता है वह यथार्थ में सुख नहीं है, किन्तु वह मात्र सुखाभाष ही है। इस प्रकार कर्म बन्धन में बद्ध होकर वे सुख के स्थान में दुःख का अनुभव किया करते हैं।

कहते हैं कि जिसमें असुख का लेश भी नहीं है उसे यथार्थ सुख समझना चाहिए।[8] ऐसा सुख जीव को कर्म बन्ध से रहित हो जाने पर मुक्ति में ही प्राप्त हो सकता है; जन्म-मरण रूप संसार में वह संभव नहीं।[9] उस मुक्ति के कारण सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र हैं जिन्हें समष्टि रूप में मोक्ष का मार्ग माना गया है।

ध्यान की परिभाषा बताते हुये आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने 'सम्यक् ध्यान शतक' में लिखा है कि 'एकाग्र चिंतानिरोधोध्यानम्' अर्थात् जो एक अग्र होता है वह एकाग्र है और निरोध का अर्थ नियंत्रण या रोकना कहलाता है।[10] ध्यान शतक में स्थिर अध्यवसान को ध्यान का स्वरूप बतलाया है और जो एकाग्रता को प्राप्त मन है उसको ध्यान कहा है।[11] आदिपुराण में भी चित्त का एकाग्र रूप से निरोध करना ध्यान है; ऐसा बतलाया गया है।[12] भगवती आराधना की विजयोदका टीका में राग, द्वेष और मिथ्यात्व के संपर्क से रहित होकर पदार्थ की यथार्थता को ग्रहण करने वाला जो विषयांतर के संचार से रहित ज्ञान होता है वह ध्यान है।[13]

---

8. स धर्मो यत्र नाधर्मस्तत् सुखं यत्र ना सुखम्।
तज्ज्ञानं यत्र नाज्ञानं सा गतिर्यत्रनागतिः॥ (आत्मानुशासन, 46)
9. आत्मायत्तं निराबाधमतीन्द्रियमनश्वरम्।
घातिकर्मक्षयोद्भूतं यत् तन्मोक्ष सुखं विदुः॥ (तत्त्वानुशासन, 242)
10. सम्यक् ध्यान शतक पृ.3
11. जं थिरमज्झवसाणं तं झाणं जं चलं तयं चित्तं। (ध्यानशतक 2)
12. एकाग्रयेण निरोधोयश्चित्तयस्थैकत्र वस्तुनि। (आदिपुराण, सर्ग 21)
13. जिदराणो जिददोसो जिदओ जिदभओ जिदकसाओ।
अरदिरदिमोह महणो ज्झाणोवगओ सदा होहि। (भगवती आराधना, वि.टी.1693)

तत्त्वानुशासन में भी एकाग्रचिंता को ध्यान का लक्षण निर्दिष्ट किया है और वह निर्जरा तथा संवर का कारण है।[14] योगसार प्राभृत में ध्यान के लक्षण का निर्देश करते हुये कहा है आत्मस्वरूप का प्ररूपक रत्नत्रयमय ध्यान किसी एक वस्तु में चित्त के स्थिर करने वाले साधु के होता है जो उसके कर्मक्षय को करता है।[15] वस्तुतः चित्त को किसी एक वस्तु अथवा बिन्दु पर केन्द्रित करना कठिन है, क्योंकि यह किसी भी विषय पर अंतर्मुहूर्त्त से ज्यादा टिक नहीं पाता तथा एक मुहूर्त्त ध्यान में व्यतीत हो जाने के पश्चात् यह स्थिर नहीं रहता और यदि कभी हो भी जाये तो वह ध्यान न कहलाकर चिंतन कहलायेगा अथवा आलंबन की भिन्नता से दूसरा ध्यान कहलायेगा।[16] तत्त्वार्थाधिगम में आगमोक्त विधि के अनुसार वचन, काय और चित्त के निरोध को ध्यान कहा है।[17] ध्यान को साम्य भाव बताते हुये कहा है कि योगी जब ध्यान में तन्मय हो जाता है तब उसे द्वैत ज्ञान रहता ही नहीं और वह समस्त रागद्वेषादि सांसारिकता से ऊपर उठकर चित्त स्वरूप आत्मा के ध्यान में ही निमग्न हो जाता है।[18]

ध्यान के लिये मुख्य रूप से तीन बातें होना आवश्यक है– 1.ध्याता 2.ध्येय और 3.ध्यान

ध्याता– ध्याता अर्थात् ध्यान करने वाला अर्थात् जिसके द्वारा ध्यान किया जाता है वह ध्याता कहलाता है। ज्ञानार्णव में कहा है कि ध्याता में आठ गुण जरूर होना चाहिए। ध्याता मुमुक्षु हो, संसार से विमुक्त हो, क्षोभ रहित व शांतचित्त हो, वशी हो, स्थिर हो, जितेन्द्रिय हो, संवर युक्त हो, धीर हो। ऐसे आठ गुणों से युक्त ध्याता को ध्यान की सिद्धि होती है अन्यथा नहीं।[19]

ध्येय– ध्येय अर्थात् आलम्बन। दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है कि जिसका ध्यान किया जाता है वह ध्येय है। ध्यान के लिए ध्येय का होना जरूरी है। जो शुभाशुभ परिणामों का कारण हो उसे ध्येय कहते हैं।[20] परंतु प्रशस्त ध्यान हेतु शुभ परिणामों में कारणभूत तत्त्व चिंतवन है।

ध्यान– ध्यान अर्थात् एकाग्रचिंतन। अर्थात् ध्याता का ध्येय में स्थिर होना ही ध्यान है।[21] इष्ट अनिष्ट बुद्धि के मूल मोह का क्षय हो जाने पर चित्त स्थिर हो जाना ध्यान है।[22]

---

14. एकाग्र-चिंता रोधो यः परिस्पन्देन वर्जितः।
    तद्ध्यानं निर्जरा-हेतुः संवरस्थ च करणम्॥(तत्वानुशासन 56)
15. योगसार प्राभृत (अमितगति) 6-7
16. मुहर्त्तात्परतश्चिन्ता यद्वाध्यानान्तरं भवेत्।
    वध्वर्थसंकमे तु स्याद्दीर्घाऽपि ध्यान-सन्ततिः॥(योगशास्त्र 4/116)
17. तत्त्वार्थाधिगम भाष्य, सिद्धसेन गणि 9-20
18. साम्यमेव परं ध्यानं प्रणीतं विश्वदर्शिभिः।
    तस्यैव व्यक्तये नूनं मन्येऽयं शास्त्रविस्तरः॥(ज्ञानार्णव, अध्याय 24/13)
19. मुमुक्षुर्जन्मनिर्विण्णः शान्त चित्तो वशी स्थिरः।
    जिताक्षः संवृतो धीरो ध्याता शास्त्रे प्रशस्यते॥ (ज्ञानार्णव)
20. ध्येयमप्रशस्तप्रशस्त परिणाम कारणं। (चारित्रसार, 267/2)
21. ध्यायते येन तद्ध्यानं यो ध्यायति, स एव वा।
    यत्र वा ध्यायते यद्वा, ध्यातिर्वा ध्यानमिष्यते॥ (तत्त्वसार)
22. इष्टानिष्टार्थमोहादिच्छेदाच्चेतः स्थितं ततः।
    ध्यान रत्नत्रयं तस्मान्मोक्षस्ततः सुखम्॥ (अनगार धर्मामृत)

ध्यान के विषय में जितना लिखें उतना कम है। आचार्यश्रीजी ने इस कृति में ध्यान की संपूर्ण विवेचना बड़ी ही सरल शब्दों में पद्य रूप में की है। ध्यान के चार प्रमुख भेद एवं उनके भी चार-चार भेद तथा पंचधारणाओं का वर्णन तो बहुत ही सुंदर ढंग से किया है। आचार्य भगवन् ने जो इस कृति में 70 भावनाओं का वर्णन किया है वह मैंने अन्यत्र कहीं नहीं देखा। अभी तक 12, 16 आदि भावनाएँ तो सुनी थी परन्तु इनके साथ 25, 7, 4, 3, 2, 1 ये भी भावनाएँ इस कृति; 'सम्यक् ध्यान शतक' में ही देखने को मिलीं। आचार्य भगवन् के मुखारबिंद से जब इन सभी भावनाओं का विस्तार से वर्णन एवं इन भावनाओं के द्वारा ध्यान कैसे करें? कैसे अपनी आत्मा को; अपने मन को इन भावनाओं के द्वारा स्थिर करें? आदि सुनते हैं तो मानो ऐसे लगता है जैसे साक्षात् प्रभु की दिव्यध्वनि रूपी वह वाणी ही हमें साक्षात् प्राप्त हो रही है। आचार्यश्रीजी लिखते हैं कि-

शतक वर्ष नहीं चाहिए, अन्तर्मुहूर्त्त मात्र।
पूर्ण-लीन निश्चल जहाँ, मुनिवर मोक्ष सु-पात्र॥

संसार से मुक्ति पाने शताधिक वर्षों का होना आवश्यक नहीं है बल्कि अन्तर्मुहूर्त्त काल मात्र में ही निश्चल-एकाग्रवृत्ति से अपनी आत्मा में लीन हो जाते हैं तो उन्हें सम्पूर्ण कर्मों से छुटकारा पाने रूप मुक्ति या मोक्ष की प्राप्ति अवश्य होती है।

णमोकार मंत्र की महिमा बताते हुए गुरुदेव ने लिखा है-

णमोकार शुभ-मंत्र है, सब मंत्रों का राज।
शीघ्र, अशुभ-विधि-नाशकर, सिद्ध बनावे काज॥

णमोकार मंत्र; सभी वीतराग मंत्रों में प्रधान राजा के समान माना गया है। जो सब कार्मों का शीघ्र ही क्षय करके सिद्ध पद को प्राप्त कराता है।

यह "सम्यक् ध्यान शतक" एक लघु पद्यमय ग्रन्थ होते हुये भी आचार्य भगवन् श्रीआर्जवसागरजी महाराज ने इसमें 'गागर में सागर' भर दिया है। इस शतक की भाषा सरल साहित्यिक, रसमय है। यह ध्यान का लघु ग्रंथ साधुओं एवं श्रावकों के लिए एक उपहार स्वरूप है। गुरुदेव के प्रवचनों का जो एक बार रसपान कर लेता है वह उनकी सरल सुबोध भाषा, काव्य से ओत-प्रोत प्रवचन, मीठी-वाणी, मधुर मुस्कान, चेहरे पर तपस्या का तेज लेकर मन को मुग्ध कर लेता है।

आचार्य भगवन् की जितनी प्रशंसा-अनुशंसा की जावे उतनी कम है। उनकी रचित कृतियाँ भी जनमानस तक पहुँचकर श्रेष्ठता को प्राप्त हुई हैं। ज्ञान, ध्यान, तप के द्वारा लोक कल्याण का पवित्र कार्य करते हुये अपने समय का सदुपयोग करते हुये जिनवाणी के मर्म को बताने में संलग्न रहते हैं। गुरुदेव की यह अद्वितीय (Unique) कृति "सम्यक् ध्यान शतक" भाव, भाषा, शैली आदि की दृष्टि से सर्वोत्तम है। यह हम सभी धर्मध्यान पिपासुओं को पठनीय, आचरणीय एवं आदरणीय है। भविष्य में भी आचार्यश्री की लेखनी से अनेकानेक कृतियाँ प्रकट होती रहें और हम सबका कल्याण करती रहें। इसी भावना के साथ आचार्य भगवन् के चरणों में त्रिकाल वन्दना करके बारंबार नमोस्तु निवेदित करती हूँ।

नमोस्तु आचार्य भगवन्........।

सिद्धचक्र महिमा

-आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी

सिद्धचक्र की आराधन हो, अनंत सुख का अभिनंदन।
अनंत गुणों की उपलब्धि हो, अनंत सिद्धों को वंदन।
एक सिद्ध के सभी प्रदेशों, में अनंत सिद्ध वसते।
मुख्य अष्ट गुणों से मण्डित, सिद्धालय में प्रभु लसते॥ 1॥

★★★

सम्यक्त्वादि अष्ट गुणों सह, अनंत शक्ति के धाम रहे।
दर्श-ज्ञान से पूर्ण विश्व को, जाने, केवलज्ञान रहे।
तीन लोक के मस्तक पर जो, शिखामणि सम कहलाते।
एक हजार आठ नाम शुभ क्षेमंकर सबको भाते॥ 2॥

★★★

धर्मी नारी मैनासुंदरि, शुभ लक्षण जिसने पाए।
नित्य रात-दिन जिसने पति की, सेवा कर प्रभु गुण गाए।
पहुपाल ने कोड़ी के संग, विवाह जब वह रचवाया।
नहीं ग्लानि कर धर्मी के संग, सेवा भाव जिसे भाया॥ 3॥

★★★

''मै'' ना सुंदरी कहने वाली, नहीं रूप अभिमानी थी।
कुष्ठ रोगियों के रोगों को, हरा जु सुखद कहानी थी।
मुनिवर के उपदेश मात्र से, जिसने मण्डल रचवाया।
श्रीपाल वे हुए निरोगी, भोग तजे; संयम पाया॥ 4॥

★★★

मैनासुंदरी की भक्ति ने, कर्मबंध को शिथिल किया।
सिद्धचक्र की आराधन से, रोग हरा भव सफल किया।
श्रीपाल वे संयम पालक, स्वार्थी जग से पार हुए।
आत्मिक बल से भव समुद्र को-लांघ; सदा जयकार हुए॥5॥

ध्यान लगाकर कर्म शत्रुओं-, को जीता साधु बनकर।
नहीं रमें वे राज्य भोग में, न डूबे स्वदु बनकर।
अतिशय वैरागी बनकर फिर, वन में जा शुभ ध्यान किया।
पाकर केवल ज्ञान श्री फिर- मोक्षश्री का पान किया॥ 6॥

★★★

धर्म गुणों के संस्कार से, मैनासुंदरि पूर्ण रही।
श्रद्धा रखकर वीतराग में, भक्ति से संपूर्ण रही
गुरु आशी-व्रत पाए, जिसका-पावन जीवन धन्य हुआ।
ऐसी उत्तम आराधन का, नहीं उदाहरण अन्य हुआ॥ 7॥

★★★

सिद्धों की अर्चा पूजा से, पाप पलायन हुआ विशेष।
नहीं रहा था पूर्व जन्म के, मुनि निंदा का कर्म जु शेष।
वीतराग की भक्ति मात्र ही, देती सुख, न रागी की।
जंगल में भी रक्षा होती, महा पुण्य के भागी की॥ 8॥

★★★

(दोहा)

मैनासुंदरि ख्यात जो, सिद्धचक्र के काज।
सिद्ध हुए श्रीपाल भी, श्री पालक वे राज॥ 9॥

★★★

सिद्ध सु-चक्र विधान से, सर्व मिटें संताप।
'आर्जवता' से शिव मिले, दें सिद्धों का जाप॥ 10॥

अशोकनगर, 22/11/2023

कभी न गुरु को भूल है जाना।
कभी स्वार्थ में फूल न जाना।
गुरु के पथ पर नित प्रति जाना।
गुरु आशी पा सद्‌गति पाना॥

–गुरु आर्जव वाणी

★★★

नमोस्तु गुरुदेव

जम्बूस्वामी अष्टक

(लय-महावीराष्टक)

-आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी

यहाँ पंचम युग में, बने अर्हन् महा हो।
निजी समता पायी, सुमग शिव में जहाँ जो॥
जगत् भाये ऐसी, सुखी आतम तुम्ही हो।
प्रभो जम्बू स्वामी, मुक्ति-पथ दायी सदा हो॥1॥

★★★

स्त्रियां छोड़ीं जिनने, नयन सुख देखा नहीं हो।
महल संपद् छोड़ी, सुशिक्षा चोरों को दी हो॥
नगन दीक्षा धारी, बने पावन मुनी हो।
प्रभो जम्बू स्वामी, मुक्ति-पथ दायी सदा हो॥2॥

★★★

पञ्चशत चोरों ने, व्रतों को धारा जहाँ हो।
मुनी दीक्षा धारी, सुध्यान कीना वहाँ हो॥
आप से पा शिक्षा, आप सम ज्ञानी बने जो।
प्रभो जम्बू स्वामी, मुक्ति-पथ दायी सदा हो॥3॥

★★★

कुमारावस्था में, धरा संयम महा हो।
प्रशम भावी, मौनी, वा शुभ ध्यानी बने हो॥
प्रसन्नात्मा पावन, जगत्, त्यागी तुम्ही हो।
प्रभो जम्बू स्वामी, मुक्ति-पथ दायी सदा हो॥4॥

★★★

सुमार्गी निर्मोही विगत-भव-सुख सदा हो।
सुधर्मा-स्वामी के, शिष्य उत्तम महा हो॥
विमल-धी, शुद्धात्मा, सुज्ञान-केवल गुणी हो।
प्रभो जम्बू स्वामी, मुक्ति-पथ दायी सदा हो॥5॥

स्वपर हित कर्त्ता वा, स्वात्म निर्भर तुम्ही हो।
रहे इंद्रिय-जेता, धर्म-जिन नेता तुम्ही हो।
विजित कामी शत्रु, जगत् पूजित महा हो।
प्रभो जम्बू स्वामी, मुक्ति-पथ दायी सदा हो॥6॥

★★★

ज्ञान की दी गंगा, विश्व के ज्ञाता तुम्ही हो।
दिया दर्शन सम्यक्, कुदर्श हर्ता तुम्ही हो॥
चरित उत्तम धारी, मग्न आतम मुदा हो।
प्रभो जम्बू स्वामी, मुक्ति-पथ दायी सदा हो॥7॥

★★★

हो बाल ब्रह्मचारी सु-वीतरागी महा हो।
सु-पावन भू मथुरा, आप शिवगामी जहाँ हो॥
अनंत गुण के स्वामी, मोक्ष पद धामी सदा हो।
प्रभो जम्बू स्वामी, मुक्ति-पथ दायी सदा हो॥8॥

★★★

(दोहा)

जम्बू स्वामी जीवनी, वैरागी-पन लाय।
महिमाकारी सौख्य वह, मोक्ष मार्ग का भय॥

★★★

जम्बू स्वामी देव को, भक्ति सहित जो ध्याय,
'आर्जवता' से पूर्ण हो, मुक्ति सुपद को पाय॥

खनियांधाना, 24 दिसम्बर 2023

विद्या गुरु विनयांजलि (विद्यांजलि)...

आचार्य श्री आर्जवसागर जी

जिसमें देखी सदा सहजता।
जिसमें देखी थी गंभीरता।
जिनमें पायी समय उपयोगिता।
उनके गुण को हम भी पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 1।।

★★★

स्वावलंबित था गुरु जीवन।
त्याग, तपस्या थी भी पावन।
स्वाध्याय मय था शुभ जीवन।
उन जैसे जीवन को पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 2।।

★★★

नहीं तिथि थी अतिथि थे वे।
नहीं नाम गृहि का लेते थे।
आवश्यक में कमी नहीं थी।
उन सम ज्ञानी हम बन जायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 3।।

★★★

शीत विजय को वे करते थे।
उष्ण परिषह वे सहते थे।
मेवों पर आशा ही ना थी।
सहनशीलता हम भी पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 4।।

पकवानों की चाह नहीं थी।
मधुर स्वाद की आश ही न थी।
सुख-दुख में नित समता भी थी।
उन जैसी समता हम पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 5।।

★★★

दृढ़ आस्था निज कर्मों पर थी।
मिथ्यामत पर पूर्ण अरुचि थी।
परिग्रह की न आश कभी थी।
दृढ़ श्रद्धानी जग में भायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 6।।

★★★

नहीं आलसी मन था जिनका।
अध्यातम जीवन था जिनका।
दयालुता के भी गुण गायें।
दया धर्म मय जीवन पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 7।।

★★★

गुरुकुल के वे निर्माता थे।
जिनालयों के उद्धारक थे।
शिला तीर्थ के प्रेरक भी थे।
जन-जन में यह अलख जगायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 8।।

आसन विजयी पूर्ण गुरु थे।
योग धारते जहाँ गुरु थे।
विहार करते अथक पूर्ण थे।
उनके योगों को हम पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 9।।

★★★

वर्तमान में बहु- दीक्षक थे।
मोक्षमार्ग के भी शिक्षक थे।
शिक्षाओं के लेखक भी थे।
गहरे अनुभव जिनसे पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 10।।

★★★

काव्य रचयिता संस्कृत में थे।
हिंदी रचयिता महाकवि थे।
सिद्धांतों के अध्येता थे।
उन सम चिंतवन हम सब पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 11।।

★★★

आकर्षक भी तन था जिनका।
पवित्र-पावन मन था जिनका।
कभी निंद न वचन सुनाये।
गुरु वचनामृत सबको भायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 12।।

शिक्षा में संस्कार खूब था।
अनेकांत में मन संपूर्ण था।
अनेकार्थ की शैली पायें।
जिनवाणी में हम रच जायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 13।।

★★★

बुंदेली में रुचि रखते थे।
दूर दृष्टि भी सब रखते थे।
मेरी-मेरी न करते थे।
ऐसी दृष्टि हम भी लायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 14।।

★★★

मिथ्या मत के खण्डक गुरु थे।
शिष्यों के अनुशासक गुरु थे।
आर्ष परंपरा धारक गुरु थे।
उसी प्रथा को सब अपनायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 15।।

★★★

प्रवचन के सुखकर कर्त्ता थे।
कथानकों में रुचिकारक थे।
प्रभावना के जो रसिया थे।
ऐसी रुचि भी सब जन पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 16।।

★★★

कठोर तप के अनुपालक थे।
जंगल में मंगल कारक थे।
नीरसता का रस लेते थे।
इसी त्याग का रस हम पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 17।।

दक्षिण जन्मा शरीर जिनका।
सहनशील था जीवन जिनका।
पाप हराने कठोर थे जो।
ऐसे तन मन सब जन पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 18।।

★★★

धर्म की शिक्षा प्रथम जिन्हें थी।
लौकिक शिक्षा साथ भले थी।
लौकिकता से परहेज भी था।
धर्म मार्ग पर सब जन जायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 19।।

★★★

वैरागी-पन के चाहक थे।
स्याद्वाद के जो ग्राहक थे।
भोग-विरक्ति के पालक थे।
उसी विरक्ति पन को पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 20।।

★★★

आश्रम के जो उपदेशक थे।
साध्य- साधना निर्देशक थे।
सल्लेखन में समाधि पर थे।
आत्मलीनता गुरु सम पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 21।।

★★★

गुरु समाधि में नित जागृत थे।
वीतराग गुण चिंतवन रत थे।
शुभ ध्यानों में नित्य निरत थे।
हम ध्यानी बन शुभ गति पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 22।।

दस सु-प्रांतों की भू पावन।
गुरु विहार से हुई रज चन्दन।
जैन शासन की ध्वज लहराई।
ऐसी ध्वज को सब लहरायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 23।।

★★★

विद्या के सागर गुरु प्यारे।
ज्ञान गुरु के शिष्य थे न्यारे।
'आर्जवता' के मुनि गुण धारे।
ऐसे गुण-धर सद् गति पायें।
ऐसे गुरुवर को हम ध्यायें।। 24।।

★★★

मुनि दीक्षा पा आपसे,
धन्य गुरो उपकार।
विद्यासागर सूरि को,
'आर्जव' नत शत बार।।25।।

फाल्गुन अष्टाह्निका सन् 2024
गंजबासौदा-विदिशा (म. प्र.)

शुभ-सूचक

अपने गृह के द्वार पर एवं प्रतिष्ठानों पर "जय जिनेन्द्र" "जियो और जीने दो" अवश्य लिखें एवं पंचरंगी ध्वज लगायें।

विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है

-आचार्यश्री आर्जवसागर जी

हे गुरुवर! तेरी सूरत, हर शिष्य में समायी है।
विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है।।

★★★

आचार्य ज्ञानसागर की, परंपरा जो पायी है।
बुंदेली इस धरती ने, कीर्ति जिसकी गायी है।
परम दिगंबर मुद्रा में, निर्विकारता लायी है।
परीषहों के दौर में भी, समता अपनायी है।।
हे गुरुवर! तेरी सूरत, हर शिष्य में समायी है।
विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है।।1।।

★★★

भारत की कर तीर्थ वंदना, पुण्य की कमाई है।
बाल-ब्रह्मचारी रह करके, ब्रह्म ज्योति जगाई है।
तीर्थों पर तव ध्यान की, ध्यान मुद्रा भाई है।
प्रवचन की अद्भुत शैली, शिष्यों को भाई है।।
हे गुरुवर! तेरी सूरत, हर शिष्य में समायी है।
विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है।।2।।

★★★

आपके हर शिष्य में, समकित धारा पायी है।
समन्तभद्र- सम डंके की, चोट जो लगाई है।
कुंदकुंद सम शेर जैसी, ध्वनि सबमें पायी है।
निर्भीकता की दिव्य शैली, शिष्यों में भायी है।।
हे गुरुवर! तेरी सूरत, हर शिष्य में समायी है।
विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है।।3।।

★★★

इसी भू-के शिष्यगण वे, शुद्ध कुल में जन्मे हैं।
शुद्धाचारी मात- पिता के, होनहारी ललने हैं।
अभिषेक हो या पूजन हो, खान-पान की शुद्धि है।
देखें जन दर्श मात्र में, विशुद्धि ही पाई है।।
हे गुरुवर! तेरी सूरत, हर शिष्य में समायी है।
विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है।।4।।

सिद्धांतों का आलोढ़न जो, हर शिष्य का गहना है।
आडंबर व भौतिकता बिन, जीवन में रहना है।
काव्य-कला, प्रवचन वा, परिषह जय करना है।
आपकी सब कृतियों की, रक्षा मन भायी है।।
हे गुरुवर! तेरी सूरत, हर शिष्य में समायी है।
विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है।।5।।

★★★

मौन और सामायिक की, साधना शुभ पायी है।
भाषा और सिद्धांतों की, शिक्षा भी मन भायी है।
बारह तप में तपा -तपाकर,चोखी आत्म बनाई है।
सोलावानी सोने जैसी, शिष्यातम चमकाई है।।
हे गुरुवर! तेरी सूरत, हर शिष्य में समायी है।
विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है।।6।।

★★★

हीरे जैसे पहलू निकले, शोभा जग को भायी है।
योग्य शिष्यगण चमके जग में, साधना यही सिखायी है।
भगवन जैसी महा आत्मा, सबकी यहाँ बनायी है।
अतः समाधि से गुरुवर ने,सद्गति संपद पायी है।।
हे गुरुवर! तेरी सूरत, हर शिष्य में समायी है।
विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है।।7।।

★★★

दीक्षा पायी शिष्यों ने, मोह सुध भुलाई है।
गृह-बंधु नाता न, गुरु लगन लगाई है।
चाहे पास, दूर हों गुरु, परंपरा शुभ भाई है।
'आर्जवसागर' सूरि ने, आर्जव सुरभि पायी है।।
हे गुरुवर! तेरी सूरत, हर शिष्य में समायी है।
विद्यासागर की छवि ही, हर शिष्य में पायी है।।8।।

11/04/24
विदिशा

जैन- परंपरा-गीत

(जन्म- बाल एवं व्रत संस्कार में अवश्य सुनाएँ)

-आचार्यश्री आर्जवसागर जी

जैन धर्म की परंपरा को सदा निभाना भैया। (बहिना)
धर्म मार्ग की परंपरा को सदा बढ़ाना भैया। (बहिना)

★★★

1. सप्त व्यसन कर दुर्जन -संगति -में ना जाना भैया।
देव, गुरु के दर्शन से, भव -सफल बनाना भैया।
गुरु प्रवचन सुन, ग्रंथ-वांचकर ज्ञान बढ़ाना भैया।
श्रमण तीर्थ हैं चलते-फिरते रक्षा करना भैया।।(बहिना)

★★★

2. हिंसक खाद्य व निशि भोजन में, न फँस जाना भैया।
धोखे, ठग से छल कपटी भी, ना बन जाना भैया।
निर्लोभी व संतोषी बन, जग में भाना भैया।
दानी उपकारी बनकर तुम, फर्ज निभाना भैया।(बहिना)

★★★

3. कुएँ स्रोत के जल- ग्रहण का नियम निभाना भैया।
मोटे दोहरे छन्ने से जल, सदा ही छानना भैया।
मात-पिता को देश छोड़कर,कहीं ना भागना भैया।
नौकर बिन, तुम स्वयं गुरु की, सेवा करना भैया। (बहिना)

★★★

4. सराग देव की परंपरा को कभी न लाना भैया।
नव -देवों उन वीतराग की, पूजन करना भैया।
सम्यग्दर्शन नियम- पूर्ण यह, सदा निभाना भैया।
अणुव्रत, प्रतिमा -धारण से तुम, सद्गति पाना भैया। (बहिना)

★★★

5. पर्युषण में हरी त्याग का, भाव सदा हो भैया।
विजातीय में विवाह गृह का, नहीं रचाना भैया।
विधुर,विवाही महिला का भी, परिणय न हो भैया।
न्याय-मार्ग से चलो निरंतर, पुण्य बढ़ाओ भैया।(बहिना)

★★★

6. देश, जाति, कुल शुद्धि को भी, ध्यान में लाना भैया।
मिली बपौती पर न कुछ भी, ना इतराना भैया।
संयम मय ध्यानी बन निज -सुख को पाना है भैया।
सल्लेखन से स्वर्ग सुखी हो, शिवपुर जाना भैया। (बहिना)

मुंगावली, अशोकनगर (म. प्र.) 27 फरवरी 2024

धर्म भी एक रथ होता है।
मोक्ष-मार्ग इक पथ होता है॥

श्रावक धर्म-एक चाक सदृश है।
मुनि धर्म भी साथ चक्र है॥

★★★

जहाँ गृहि हों मुनिवर आते।
संस्कार व्रत गृहि वे पाते॥

गृहि, मुनिवर से धर्म बढ़े नित।
इति योग से पूरा हो हित॥

★★★

-गुरु आर्जव वाणी

मुनि मूरत के शिल्पी....

-आचार्य श्री आर्जवसागर जी

मुनि मूरत के शिल्पी गुरुवर।
मूलगुणों के दायक गुरुवर।
भव्यों के उद्धारक गुरुवर।
मोक्षमार्ग उपकारक गुरुवर।। 1।।

धर्म संस्कृति के रक्षक गुरुवर।
जीवों के संरक्षक गुरुवर।
जिन-आगम के शिक्षक गुरुवर।
पंचाचार सु-दक्षक गुरुवर।। 2।।

जिन-प्रभावना कुशल रहे हो।
धर्म-भावना भविक रहे हो ।
काव्यों के तुम रसिक रहे हो।
तत्व-ज्ञान से लसित रहे हो।। 3।।

वचन नहीं वे प्रवचन देते।
'देखो' कहकर मन हर लेते।
नहीं काम का भार हैं देते।
गृहि न नाम प्रवचन में लेते।। 4।।

आओ आओ नहीं बुलाते।
जाओ जाओ नहीं बताते।
जाना आना समझ ना पाते ।
अतः गुरु अतिथि कहलाते।। 5।।

नहीं रात में बात वे करते।
ना हि रात में विचरण करते।
मौन धारते पापों में वे।
पूज्य कहाते मुनि-गण में वे ।। 6।।

पर दोषों में अनदेखा पन ।
वचनों में था अन-निंदकपन।
जन-जन में था नित अपनापन।
त्याग, तपों में पूरा तन मन।। 7।।

मुनि पनघट के कुंभकार थे।
मोक्ष नाव के कर्णधार थे।
सबमें इक पहचान थे गुरुवर।
मोक्षमार्ग की शान थे गुरुवर।। 8।।

मंद-मंद मुस्कान जहाँ थी।
दृष्टि जहँ करुणा भीगी थी।
नहीं बाध्य व बंधकपन था।
अनेकांत मय 'आर्जव' मन था।। 9।।

12/04/24 विदिशा

विनयाञ्जलि

-आचार्यश्री आर्जवसागर जी

('आचार्यश्री 108 विद्यासागर जी महाराज के समता पूर्वक समाधिस्थ होने पर विनयाञ्जलि')

अतिशय क्षेत्र थूबोन जी में शीतकाल के समय सिद्धचक्र विधान का अन्तिम दिन था और रात्रि में पौने दो बजे अचानक मेरी नींद खुली और तुरन्त कायोत्सर्ग किया। अश्रुधारा भी बह पड़ी और गुरुवर के लिए महाशांति की कामना की।

प्रातः समाधि का समाचार मिलते ही तुरन्त ही विचार व ध्यान में आया कि आज पिछली रात्रि में करीब पौने दो बजे मेरी नींद अचानक खुल गयी थी और मैंने कायोत्सर्ग किया था, इसका कारण क्या हो सकता है? हम जानते हैं कि सल्लेखना में उत्कृष्ट रूप से अड़तालीस मुनिवर क्षपक की सेवा निरत होते हैं ऐसा पूर्वाचार्यों का कथन है। हो सकता है कि हमारे गुरुवर ने अपनी सल्लेखना में अड़तालीस मुनियों को याद किया हो और उसी बीच मेरी भी स्मृति गुरुवर को हो आयी हो, क्योंकि मैंने भी गुरुवर की लगातार 1984 से 1990 तक (छः वर्षों तक) लगन से सेवा की थी उनकी सिखाई साधना ने मेरे जीवन को महान बनाया है। और भावना यही थी कि कम से कम जीवन के अंत में साक्षात् गुरु सेवा का अवसर मुझे मिले किन्तु अचानक दिनांक 18-2-24 दिन रविवार तिथि माघ शुक्ला नवमी को समाधिस्थ संत शिरोमणि, सिद्धान्त वेत्ता, अध्यात्म चिन्तक मोक्षमार्ग अनुभवि, धर्म क्षेत्र उद्धारक, चैतन्य कृतियों और साहित्यिक कृतियों के निर्माता तथा देश के शुभ चिन्तक गुरुवर आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर जी महाराज भले ही आत्म दृष्टि से जयवन्त हैं लेकिन नश्वर काया या तन से अब यहाँ नहीं रहे।

अनुमान क्या पूर्ण विश्वास था भक्तों और शिष्यों को कि गुरुवर की काया अभी कम से कम दस-पन्द्रह वर्ष तक अमर रहेगी, लेकिन कर्म-जन्य व्याधि के संयोग से स्वप्नवत् अल्प-काल में ही वह काया वियोग को प्राप्त हो गयी।

गुरुवर के नये, पुराने शिष्यगण गुरुवर से प्रत्यक्ष व परोक्ष में मिलने वाले अपूर्व-अपूर्व अनुभवों की वाट ताकते रह गये गुरुवर के अभाव में वातावरण में शून्यसान या अंधकार- सा छा गया।

वाट निहारते वे क्षेत्र व कला-कौशल के कार्य तथा देश उद्धार की योजना रूप कार्य गुरुवर का गुणगान गाते हुए सदियों तक निहारते रहेंगे।

गुरुवर की चेतन अचेतन कृतियाँ गुरुदेव की आन्तरिक भावनाओं एवं आध्यात्मिक साधना की सुरभि सदियों तक बिखेरती रहेंगी।

गुरुवर ने जो व्रतों का आशीष दिया और अपनी मृदु-मुस्कान से शिष्यों की साधना में उत्साह दिया वह उनकी कृपा-दृष्टि से फलता-फूलता रहे यही उत्कृष्ट आशा हरेक शिष्य और भक्त के दिल में बनी रहेगी।

गुरुदेव ने जो व्याधि में भी साहस पूर्ण कार्य कर अपनी त्यागी हुईं वस्तुओं की ओर नहीं निहारा और

वैद्यों के कहने पर कि आप इस वस्तु (दूध, गन्ने का रसादि) का सेवन करेंगे तो जीवन पा लेंगे, इन्कार कर दिया। और बल्कि यही कहा कि- यह तो मेरा त्याग है इसका नाम क्यों लेते हो। ऐसा कहकर महान दृढ़ता का परिचय दिया। ऐसा दृढ़ संकल्प सभी के लिए आदर्श बनकर रहेगा।

मुनियों के निचय या सन्निधि में चैत्य सिद्धान्त की जयघोष में तत्त्वों का चिन्तवन, मनन करते हुये जिन-धर्मामृत का पान और णमोकार मंत्र का ध्यान करते हुये जो गुरुदेव ने इस नश्वर काया को मुस्कराते हुए वीरों के सदृश छोड़ दिया, उनका यह समाधि-मरण सल्लेखना उनके लिए वरदान और सद्गति का कारण बन गई और उनका जीवन धन्य हो गया।

समाधिस्थ गुरुदेव, देवलोक में जाकर विदेहों में इन्द्र रूप में जाकर तीर्थंकर प्रभु का दर्शन करते होंगे। उन्हें शीघ्र ही पुनः मनुष्य-भव पाकर निर्ग्रन्थ-पद प्राप्त कर सर्व अष्ट कर्मों से मुक्ति (मोक्ष) की प्राप्ति हो ऐसी हम मंगल कामना करते हैं। इत्यलं।

'मंगलभूयात्'

गुरु-स्तुति

वीतरागी देह में, अध्यात्म का संचार है।
आगम की है देशना, व काव्य का भंडार है॥ 1॥

महावीर की राह में, चल पड़े तो चल पड़े।
गुरु के आशीष की, महिमा अपरंपार है ॥ 2॥

फूल फुटेरा में खिले, जहाँ जन्म लीन्हा आपने।
पावन भूमि दमोह का, पुण्यशाली घरवार है ॥3॥

सोने से तप त्याग की, सोनागिर दीक्षा मिली।
धन्य हैं वो माता-पिता, और वो परिवार है॥ 4॥

अर्जित कर्म नाश कर, आर्जवसागर बन गए।
मन्द-मन्द मुस्कान में, सहज सम व्यवहार है॥ 5॥

मोक्षमार्ग की चाह में, मुड़के कहाँ देखा कभी।
आचार्य श्री का आलंबन, गुरु गुण आधार है॥ 6॥

लोक कल्याण भावना विधान अनुपम रच दिया।
प्राणी जीव रक्षा में, आपका महा उपकार है ॥ 7॥

गुरु नमन गुरु आज्ञा नमन, बस हमारा ध्येय हो।
गुरु पथ में चलता रहे, 'प्रवीण' सपना साकार है ॥8॥

परम पूज्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के चरणों शब्द पुष्प सादर प्रस्तुत, नमोस्तु गुरुदेव।

शब्द संकलन : प्रवीण जैन 'समर्पण'
दानिश कुंज कोलार रोड , भोपाल

सदाचार सूक्ति काव्य में पथ्य-अपथ्य विवेचन

-डॉ सुकुमाल जैन आयुर्वेद (एम.डी) भोपाल

परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के चरणों में नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु आदरणीय सकल दि.जैन समाज अशोक नगर एवं इस कार्यक्रम में भाग लेने आये सभी चिकित्सक बंधुओं को जय जिनेन्द्र! आज मेरा बड़ा सौभाग्य है आचार्यश्री के सान्निध्य में किये जाने वाले कार्यक्रम में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसका श्रेय डॉ. मनोज जैन भोपाल वालों को जाता है जिन्होंने मुझे यहाँ आने के लिये प्रेरित किया।

मेरा संक्षिप्त परिचय यह है कि मुझे डॉ. सुकुमार जैन कहते हैं मैं 35 साल राजकीय सेवा रजि. सहकार में रहा और मैं शा. आयु. महाविद्यालय जोधपुर से प्रोफेसर की पोस्ट से सेवा निवृत्त हुआ हूँ वर्तमान में मैं प्राईवेट रानीदुल्लैया आयुर्वेद पी.जी. कॉलेज में प्रोफेसर की पोस्ट पर कार्यरत हूँ। अन्य चिकित्सकों के साथ साथ अनुभाग है क्षार सूत्र क्या है इसके बारे में आपको आगे बताऊँगा। उपस्थित चिकित्सक सभी इसके बारे में जानते होंगें ही विषय इतना विशाल है कि जिस पर जितना बोलो कम है फिर भी मैं आचार्यश्री के आशीर्वाद से अपना मत प्रस्तुत करने की कोशिश करता हूँ, आहार औषध दृश्य में करीब 80 सूक्ति हैं जिसमें आहार से आत्म चिकित्सा का भी उल्लेख कर दिया है जिसमें आहार दवा और पथ्य अपथ्य जिन में भोजन, उबलापानी, दिन में भोजन आदि वर्णन है। आहार में खान-पान का संयोग रसोईघर और पथ्य अपथ्य में चिकित्सा क्षेत्र इसका काफी महत्व है कभी दही अपथ्य है और किसी दिन पथ्य है दूध सभी में पथ्य सुबह अवश्य दें। आयुर्वेद के अनुसार मूली के साथ दूध अपथ्य है पथ्यापथ्य में परहेज का भी समावेश किया जा सकता है।

गर्भस्थ के उपयोग हेतु भोजन के बाद.... गर्भकाल में शक्कर का उपयोग। आजकल होटलों में खाने के साथ कोल्ड ड्रिंक जरूर मंगाते हैं। रात्रि में भोजन करना फैशन में आ गया। यह स्वास्थ्य को बाधक है।

आज अपथ्य आहार विहार से शारीरिक संतुलन असंतुलित होता जा रहा है। जिसके कारण उदर रोग बी.पी, हृदय रोग, पाईल्स, भगंदर, फिशर आदि रोगों की उत्पत्ति होती है।

मैं अपने विषय पर आता हूँ जो मैंने क्षारसूत्र का उल्लेख किया था आयुर्वेद में क्षार सूत्र चिकित्सा बड़ा महत्वपूर्व स्थान रखती है। इसके लिए हम मूल व्याधि सम्बन्धि रोगों की चिकित्सा करते हैं जैसे बबासीर भगन्दर नाड़ी परीक्षण आदि।

अन्त में मैं समाज के पदाधिकारियों से निवेदन करना चाहूँगा कि मैं क्षार सूत्र विशेषज्ञ हूँ और बबासीर, भगन्दर आदि का आप्रेशन क्षार विधि द्वारा करता हूँ। जैन समाज की ओर से नि:शुल्क केम्प लगाये ये बीमारी जिससे पलायन कर सके और हम लोगों की सेवा कर सकें।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज विरचित तीर्थोदय काव्य में निश्चय और व्यवहार कथन

-मनोज जैन शास्त्री, सूबेदार वार्ड, वर्धमान कॉलोनी, सागर

जैन दर्शन की आधारभूत प्रमुख विशेषताओं में स्याद्वाद और अनेकान्त का नाम सभी धर्मावलम्बी सहज रूप से स्वीकार सकते हैं, और इन दोनों सिद्धान्तों का आधार जैनदर्शन में वर्णित नयप्ररूपणा है। वस्तु अनेक धर्मात्मक है। हमें वस्तु के सभी रूप न तो दिखाई देते हैं, न ही हमारे ज्ञान के विषय हैं। इसलिये स्याद्वाद रूप कथन किया जाता है। जिसके लिये हमें नयों का सहारा लेना पड़ता है। अंधों के द्वारा हस्ति स्वरूप निजानुभव रूप व्याख्यान करना एवं आपस में कलह होना अंत में नेत्र वाले पुरुष के द्वारा हस्ति के सही स्वरूप का बखान बिना नयों के ज्ञान के हम भी अंध पुरुष के समान ही हैं।

तीर्थोदय काव्य में प्रमुख रूप षोडशकरण भावनाओं का वर्णन किया गया है। तथापि नय व्यवस्था सर्वत्र दृष्टिगोचर है, क्योंकि नय के बिना कथन असंभव है।

नय का स्वरूप- नय के संबंध में अनेक आचार्यों के विभिन्न कथन दृष्टिगोचर हैं, परंतु वे सारे कथन एक रूप और एकार्थ को लेकर प्रयुक्त किये गये हैं, जो उदाहरण और परिभाषा की दृष्टि से निम्न हैं-

स्याद्वाद-प्रविभक्तार्थ-विशेष-व्यञ्जको नयः।[1]

नीयते गम्यते येन श्रुतार्थांशो नमो हि सः।[2]

जीवादीन् पदार्थान् नयन्ति, प्राप्नुवन्ति व्यञ्जन्ति इति नयाः।

अर्थात् जो वस्तु का एकदेश कथन करता है वह नय है। सारांश रूप में हमारे द्वारा कहा गया प्रत्येक कथन नय रूप ही होता है।

अनेकान्तात्मक वस्तु में विरोध के बिना हेतु की मुख्यता से साध्य विशेष की यथार्थता के प्राप्त कराने में समर्थ प्रयोग को नय कहते हैं।[3]

नय के भेद- वस्तु के अनेकानेक भेद भाव और धर्म की दृष्टि से निरूपित किये जा सकते हैं एवं निरूपित हैं, परंतु अवबोधनार्थ आचार्यों ने निम्न भेदों को यहाँ प्ररूपित किया है-

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढ़ैवम्भूता नयाः॥[4]

अर्थात् नैगम नय, संग्रह नय, व्यवहार नय, ऋजुसूत्र नय, शब्द नय, समभिरूढ़ नय और एवंभूत नय इन सात नयों का व्याख्यान आचार्यश्री उमास्वामी महाराज ने तत्त्वार्थ सूत्र नामक ग्रन्थ में किया है। इन्हीं सात नयों में द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक, इन दो नयों को जोड़कर नौ नय हो जाते हैं। उपरोक्त सात नयों में प्रथम तीन नय द्रव्य के आश्रित होने से द्रव्यार्थिक एवं शेष चार नय पर्याय के आश्रित होने से पर्यायार्थिक नय कहे गये हैं।
आध्यात्मिक पद्धति में निश्चय और व्यवहार ये दो नय के भेद है-

निश्चिनोति इति निश्चय। स्वाश्रितो निश्चयः। अर्थात् जो स्व आश्रित होता है और स्व स्वरूप का और वस्तु स्वरूप का निश्चय कराने वाला होता है वह निश्चय नय है। अथवा

अभेदानुपचारतया वस्तु निश्चीयते इति निश्चयः। अभेद और अनुपचार से जो वस्तु का निश्चय होता है वह निश्चय नय कहलाता है।

व्यवहार नय

भेदोपचाराभ्यां व्यवहरतीति व्यवहारः। पराश्रितो व्यवहारः।

अर्थात् जो भेद और उपचार से कथन करता है और दूसरे पर आश्रित होता है उसे व्यवहार नय कहते हैं।

ववहारो ऽभूदत्थो भूदत्थो, देसिदो दु सुद्धणओ।
भूतत्थमस्सिदो खलु, सम्मादिट्ठी हवदि जीवो॥[5]

व्यवहार नय अभूतार्थ है और शुद्ध नय (निश्चय नय) भूतार्थ कहा गया है। अतः भूतार्थ नय का आश्रय लेने वाला जीव ही सम्यग्दृष्टि होता है।

निश्चयममिहभूतार्थ व्यवहारं वर्णयन्त्यभूतार्थम्।
भेतार्थबोधविमुखः प्रायः सर्वोऽपि संसारः॥[6]

निश्चय नय को भूतार्थ और व्यवहार नय को अभूतार्थ वर्णन किया गया है। प्रायः सम्पूर्ण संसार भूतार्थ ज्ञान से विमुख देखा गया है।

निश्चय नय, स्व समय अर्थात् स्वाश्रित अर्थात् द्रव्याश्रित या कहें द्रव्यार्थिक नय से कथन करता है और व्यवहार नय पर समय अर्थात् पराश्रित अर्थात् पर्यायाश्रित या कहें पर्यायार्थिक नय से कथन करता है।

सप्त नयों का स्वरूप-

1. नैगम नय- जो संकल्पमात्र का ग्राहक होता है उसे नैगमनय कहते हैं। तीर्थोदय काव्य नाम की सार्थकता में रचनाकार स्वयं काव्य रचना का संकल्प करते हुये कहते हैं-

सोलहकारण तीर्थभावना, भाऊँ कर्म नशाने को।
यह तीर्थोदय-काव्य लिखूँ मैं, भवसुख तज शिव पाने को॥[7]

2.संग्रह नय- जाति विरोध के बिना संग्रह रूप का ग्राहक संग्रह नय होता है। तीर्थोदय काव्य में पंचपरमेष्ठी का संग्रह रूप से कथन करते हुए कहते हैं कि-

पंच परम उन परमेष्ठी की, वीतराग नव-देवों की।
पूजन करलो पुण्य कमालो, नहीं सरागी देवों की॥[8]

3. व्यवहार नय- संग्रह द्वारा गृहीत विषय का विधिपूर्वक विभाजन करना, व्यवहार नय कहलाता है। तीर्थोदयकाव्य में भेद रत्नत्रय को व्यवहार मोक्षमार्ग कहा-

समदर्शन सु ज्ञान चरण यह, मोक्षमार्ग कहलाता है।
इस पर चलने वाला सच्चा साधक वह कहलाता है॥
इन दोनों में विनीत होना हम सबका कर्त्तव्य रहा।
मान घटे बस यही हमारा सुखी बने मन्तव्य रहा॥[9]

4.ऋजुसूत्र नय- वर्तमान पर्याय का ग्राहक नय ऋजुसूत्र कहलाता है। यथा- तीर्थोदय काव्य में कहा है कि दर्शन

दर्शन की विशुद्ध दर्शनमोह को तुरन्त नाश नाश कर देती।

दर्शनविशुद्धि भावना, भाते दर्शन आय।
दर्शन मोहतम शीघ्र ही, बहुत दूर भग जाय॥[10]

5.शब्द नय- लिंग, संख्या, वचन-कारक आदि के भेद होने पर भिन्न-भिन्न अर्थों का ग्रहण करने वाली नय शब्दनय कहलाता है। जैसे- तीर्थोदय काव्य में तीर्थ (पु.)तारक रूप है। तीर्थ रूप सोलह भावनाएँ (स्त्री) रूप है और आगम रूपतीर्थ (पु.) द्वादशांग रूप है। ऐसे तीर्थ का उद्‌गम तीर्थंकर से होता है।

तारक है जो भव्यजनों का, द्वादशांग शुभ तीर्थ रहा।
तीर्थंकर से होता उद्‌गम गाता आगम गीत रहा।
सदा भावना षोडशकारण भाते तीर्थंकर बनते।
तीर्थोदय है जिनसे होता, हित करते शिवसुख बरते॥[11]

6.समभिरूढ़ नय- नाना अर्थों में प्रधान अर्थ का ग्राहक नय समभिरूढ़ नय कहलाता है। तीर्थोदय काव्य में जैसे- कुन्दन का अर्थ स्वर्ण होता और कुन्द नामक पुष्प भी होता है लेकिन यहाँ कुन्दकुन्द आचार्य को स्मृत कर मुख्य बनाया है।

कुंदकुंद सम बनने सुंदर, कुंदकुंद मुनि को ध्याऊँ।
आत्मशुद्ध करने अध्यातम, सरिता में मैं रम जाऊँ॥
तपा स्वर्ण कुंदन लसता है, ध्यान अग्नि में तप जपाऊँ।
कर्म नष्ट कर कुंदन सम बन, शिवपद में रम जाऊँ॥[12]

7.एवंभूत नय- वर्तमान क्रिया की जहाँ प्रधानता हो वहाँ एवंभूतनय होता है।

जैसे- यहाँ तीर्थोदय काव्य में वर्तमान की क्रिया अन्तरंग से सम्बन्ध रखने वाली बतलाई गई है गम्भीर का सम्बन्ध एक ही काल में ध्यान से जोड़ा गया है।

मुनिवर जीवन नित रहे, अंदर बाहर एक।
आर्जव शुचिता आदि से, उत्तम पूर्ण विवेक॥
सागर सम गंभीरता, उठती धर्म तरंग।
रचित ध्यान अरु मौन में, मुनिवर वे निस्संग।
तीर्थोदय से लोक में शांति सुधा हो पूर।
काव्य पढ़ें हम नित्य हय, शिवसुख फिर ना दूर॥[13]

अध्यात्म पद्धति में कहे गये दोनों नय निश्चय और व्यवहार, हमारे लिये कार्यकारी हैं। हमें दोनों को समझना चाहिये। रचनाकार की सम्पूर्ण कृति में नयों का दोनों सामंजस्य दिखाई पड़ता है। जिनवाणी की स्तुति में रचनाकार ने जिनवाणी को गंगा सम पापनाशनी कहा है वहीं निश्चय से अनंतसुख दायिनी भी कहा है-

तीर्थंकर जिन से गंगा सम, निकली सम्यक् जिनवाणी।
द्वादशांगमय जगहितकारी, सब दुःख हरती प्रभुवाणी॥

भव्यजनों के पाप पंक को, दूर हटाये पुण्य भरे।
नमस्कार माँ शिवचाहूँ मै, अनंत सुख से पूर्ण करे॥[14]

रचनाकार एकान्त मिथ्यात्व के उदाहरण में लिखते हैं–

मम आतम यह कभी यहाँ ना, किसी तरह भी अशुद्ध है।
घर दुकान वा खानपान में पूर्ण रही वह विशुद्ध है।
यह एकांती कहे आत्मा, निश्चय इक ही नय माने।
ना व्यवहार कथन करता है नहीं अपेक्षा पहचाने॥[15]

अर्थात् हमें दोनां नयों का विवेचन करना चाहिये। यदि नय विशेष को ग्रहण करेंगे तो हम निश्चयाभासी व्यवहाराभासी या निश्चयव्यवहाराभासी हो जायेंगे। अन्य आचार्यों ने भी कहा है–

जो ववहारेण विणा णिच्छयसिद्धी कयावि णिद्दिट्ठा।
साहण हेऊ जम्हा तम्हा सो भणिय ववहारो॥[16]

व्यवहार के बिना किसी को निश्चय की सिद्धि कदापि भी वर्णित नहीं की गई है, चूँकि वह साधन हेतु है अत: व्यवहार संज्ञा को प्राप्त है।

जह णवि सक्क मणज्जो अणज्जभासं विणादु गाहेदुं।
तह ववहारेण विणा परमत्थुवदेसणसक्कं ॥[17]

जिसप्रकार अनार्य को अनार्यभाषा के बिना नहीं समझा सकते हैं उसी प्रकार व्यवहार के बिना परमार्थ का उपदेश असंभव है। तीर्थोदय काव्य में भी रचनाकार द्वारा निश्चय और व्यवहार में समीचीन सामंजस्य बैठाया गया है।

ध्यान परम उस निश्चय में जब नहीं ठहरना होता है।
तभी आत्म से बाहर आ यति वंदनादि में खोता है॥
शुभ सम्यक्-व्यवहार कहा वह वंदनादि जो पहचानें।
निश्चय में जाने का करण आगम कहता वह जाने॥[18]

अर्थात् जब हमारा मन ध्यानादि निश्चय में नहीं लगता है तब हम वंदनादि बाह्य क्रियायें करते हैं। ये सभी सम्यक् व्यवहार की क्रियायें ही हमें पुन: निश्चय में पहुँचने में कारण बनती हैं। बाह्य क्रियाओं में लगा हुआ मुमुक्षु अंतरंग पर दृष्टि रखता है। और सदा बारह भावना भाता रहता है।

जैसे मिलकर रखा दुग्ध अरु, जल लक्षण से भिन्न रहा।
वैसे चेतन अरु इस तन का, जिनवर ने हैं भेद कहा।
फिर वह देखो सदा दूर जो, धन गृह आदिक जहाँ रहे।
क्या हो सकते हैं चेतन के भिन्न रहे जिननाथ कहें॥[19]

अर्थात् अध्यात्म रसिक प्राणी चिंतन करता है कि जैसे जल और दुग्ध एकमेक होने पर भी पृथक् पृथक् हैं वैसे ही धन घर आदि भी मुझसे पृथक् हैं। तीर्थोदय काव्य में निश्चय और व्यवहार में संबंध बताते हुये लिखा है–

जहाँ मथानी फिरने में वह, दो रस्सी का योग रहे।
एक दूर हो एक खेंचते, नहीं साथ संयोग रहे।
इसी तरह वह निश्चय अरु सद्भाव धर्म व्यवहार रहे,
इन दोनों में झूला झूलें, यति जो सदा विराग रहे॥[20]

तीर्थोदय काव्य के प्रत्येक काव्य में दोनों के संबंध का विशेष ध्यान रखा गया है। प्रथम तीन पंक्तियों में याद व्यवहार का कथन है तो चतुर्थ में निश्चय का-

दर्शन से भवि बने विरागी, महा अणुव्रत अपनाते।
दीक्षा लेकर ऋद्धि आदि सह पूज्य केवली बन जाते।
कर्मबंध को तोड़ जहाँ वे भव कारागृह छोड़ महा।
सौख्य-शिवालय पाते उत्तम, जहाँ शांति है नित्य महा॥[21]

इस तरह तीर्थोदय काव्य में निश्चय और व्यवहार का कथन भली-भाँति रूप से किया गया है। दोनों मथानी की दो रस्सी के समान आवश्यक है। व्यवहार से हम निश्चय को प्राप्त करें। किम् अधिकम्- उक्तं च-

बने उदासोहं जब मानव, फिर दासोहं बन जाता।
मुनि बनकर फिर कर्म नाशकर, सोहं जिनवर सम भाता।
दूर कर्म वा इस तन से जा, अहं एक में लीन रहे।
धर्ममार्ग की महिमा न्यारी, सदा स्वयं स्वाधीन रहे॥[22]

1.आप्तमीमांसा 106
2.आप्त परीक्षा
3.सर्वार्थसिद्धि 1/33
4.तत्त्वार्थ सूत्र 1/33
5.समयसार/13
6.पुरुषार्थसिद्धि-उपाय/5
7.तीर्थोदय काव्य/3/1
8.तीर्थोदय काव्य/1/68
9.तीर्थोदय काव्य/218
10. तीर्थोदय काव्य/643
11.तीर्थोदय काव्य/703
12.तीर्थोदय काव्य/08
13.तीर्थोदय काव्य 696-998
14.तीर्थोदय काव्य/05
15.तीर्थोदय काव्य/63
16.नयचक्र
17.समयसार/7
18. तीर्थोदय काव्य/594
19. तीर्थोदय काव्य /378
20. तीर्थोदय काव्य /595
21. तीर्थोदय काव्य/524
22. तीर्थोदय काव्य/ 594

आचार्यश्री आर्जवसागरजी विरचित तीर्थोदय काव्य में सम्यक्त्व के अभाव में होने वाले आयु के उत्कर्षण

-डॉ आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज द्वारा काव्यमय जैन-सिद्धान्तों के महत्त्वपूर्ण आयामों को प्रस्फुटित करने वाला तीर्थोदय काव्य एक उपयोगी ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की शैली सुखद, सहज और सरलार्थ को पठन-पाठन-गायन करने वाले श्रोता, वक्ता और पाठक को आनंदित करने वाली है। विविध विषयों को काव्य में सूत्ररूप में लिपिबद्ध करने की अप्रतिम शैली ने इसको हिन्दी काव्य परम्परा में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। यह जैन दर्शन के सिद्धान्तों के प्रस्फुटन के लिए काव्यमय सार रूप एक महत्त्वपूर्ण कृति है। इसमें चारों अनुयोगों को प्राथमिकता दी गई, साथ-साथ अनेक स्थानों पर सामाजिक चेतना के विषयों का भी स्पर्श किया गया है। आलेख का विषय **आचार्य श्री आर्जवसागरजी विरचित तीर्थोदय काव्य में सम्यक्त्व के अभाव में होने वाले आयु के उत्कर्षण है।** इससे संबंधित तीर्थोदय काव्य में पृष्ठ क्रमांक 40 पर, काव्य क्रमांक 172-175 तक विषय का प्रतिपादन किया गया है। बहुत ही बृहत् विषय को मात्र 16 पंक्तियों में समेटकर काव्यशिल्प की अप्रतिम प्रतिभा का उदाहरण अचार्य श्री आर्जवसागरजी महाराज ने प्रस्तुत किया है।

मेरे लेख का विषय तीर्थोदय काव्य में सम्यक्त्व के अभाव में होने वाले आयु के उत्कर्षण है। तीर्थोदय काव्य से तात्पर्य है आचार्य श्री आर्जवसागरजी महाराज द्वारा विरचित काव्य के रूप में लिखा गया जैन सिद्धान्तों को प्रस्फुटित करने वाला ग्रन्थ-महाकाव्य। **सम्यक्त्व के अभाव** के मायने है- मिथ्यात्व। **आयु के उत्कर्षण** से तात्पर्य है- आयु का बढ़ना।

तीर्थोदय काव्य में आचार्यश्री ने गागर में सागर भरने का एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम किया है। इस उपक्रम के माध्यम से जनसामान्य को सहज और सरल भाषा में ही जैन सिद्धान्तों को समझने का अवसर प्राप्त है, अतः यह ग्रन्थ जो कि महाकाव्य के रूप में है, वह अपने आपमें जैन दर्शन के गौरव को परिलक्षित करता है।

जीव प्रथम गुणस्थान से लेकर तीसरे गुणस्थान तक मिथ्यात्व में रहता है। जब यह जीव चतुर्थ गुणस्थान में पहुँचता है तब यह जीव सम्यक्त्व को प्राप्त करता है। जीव की आयु का आस्रव मिथ्यात्व अवस्था में होने पर जिस आयु का आस्रव-बंध हुआ है, उसको वही प्राप्त होगी और जीव की आयु का आस्रव सम्यक्त्व होने पर भी जिस आयु का बंध हुआ है उसे वही आयु प्राप्त होगी। इस आयु का उत्कर्षण और अपकर्षण होता है। परंतु आयुकर्म का उत्कर्षण और अपकर्षण नहीं होता है। आयुकर्म यथावत् ही रहता है। इस संबंध में आचार्य श्री आर्जवसागरजी महाराज ने स्पष्ट लिखा है-

एक बार बाँधे यह प्राणी, आयुष को इस जीवन में।
नहीं बदलता आयुबंध वह, भोगे अगले जीवन में॥[1]

आयु को परिभाषित करते हुये आचार्य भगवन कहते हैं-

आयुर्जीवितपरिणामम्।

अर्थात् जीवन के परिणाम का नाम आयु है।[2]

स्थित्यनुभागयोर्वृद्धि उत्कर्षण। अर्थात् कर्म प्रदेशों की स्थिति व अनुभाव को बढ़ाना उत्कर्षण है।[3]

जीव चारों ही क्षेत्रों की (गतियों की) आयु का बन्ध होने पर सम्यक्त्व को प्राप्त कर सकता है। किन्तु अणुव्रत और महाव्रत देवायु को छोड़कर शेष आयु का बन्ध नहीं होने पर प्राप्त कर सकता है।[4]

बद्धमान और भुज्यमान दोनों प्रकार की अपेक्षा कर नरकायु का सत्त्व होने पर देशव्रत नहीं होता है, तिर्यञ्चायु का सत्त्व होने पर सकलव्रत नहीं होता है, नरक व देव गति का सत्त्व होने पर क्षपक श्रेणी नहीं होती है। असंयत सम्यग्दृष्टियों के नरक व मनुष्यायु की व्युच्छित्ति हो जाती है, क्योंकि उनके सत्त्व में अणुव्रत होते हैं।[5]

एक भव में एक ही आयु- जीव के एक भव में एक ही बँधती है और एक बार ही बँधती है। इसके लिये जीव को आठ अपकर्ष काल मिलते हैं। इन आठ अपकर्ष कालों में ही आयु का बंध होता है। यदि इनमें से न हो पाये तो मरण के अन्तर्मुहूर्त में आयु का बंध होता है। जो आयु एक बार बंध जाती है उसी आयु को भोगना पड़ता है एवं आयु प्रत्येक भव में एक बार ही बंधती है। इस विषय में आचार्य कहते हैं-

एक्कं आऊ एक्क भवे बंधमेदि जोग्गपदे।
अडवारं वा तत्थवि तिभाग सेसे व सव्वत्थ॥[6]

एक जीव को एक भव में एक समय में एक ही आयु का बंध योग्यकाल आठ बार ही बाँधता है वहाँ तीसरा भाग शेष रहे तब बाँधता है।

आयु के साथ वही गति बँधती है- आयु के साथ गति का जो बन्ध होता है वह नियम से आयु के समान ही होता है; क्योंकि गति नामकर्म व आयुकर्म की व्युच्छिति एक साथ ही होती है।

आयु और गति में अन्तर- आयुकर्म स्वतंत्र है और गति कर्म नामकर्म का एक भेद है। आयुकर्म एक भाव में योग्यकाल में एक बार ही बँधता है जबकि गतिनामकर्म प्रत्येक क्षण जीव को बँधता है। जीव को नरक आयु का बंध हुआ है और वह मरण कर नरक चला जाता है वहाँ उसके मनुष्य गति नामकर्म का उदय आता है तो वह मनुष्य गति नामकर्म तद्रूप अर्थात् नरकगति रूप में परिवर्तित होकर ही आयेगा। अर्थात् वह नरक गति नामकर्म के उदय के रूप होगा। क्योंकि ऐसा नियम है जैसी आयु प्राप्त की है वैसी ही गति का उदय आयेगा।

उत्कर्षण-

कम्मप्पसदेसट्ठिदिवड्ढावणमुक्कड्डुणा।[7]

कर्मप्रदेशों की स्थिति व अनुभाव को बढ़ाना उत्कर्षण कहलाता है।

स्थित्यनुभाग्योर्वृद्धि उत्कर्षण।[8]

स्थिति और अनुभाव की वृद्धि को उत्कर्षण कहते हैं

आयुकर्म के भेद- नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि।[9]

आयुकर्म के चार भेद हैं- नरकायु, तिर्यंचायु, मनुष्यायु और देवायु।

नरकायु के उत्कर्षण- मिथ्यात्व के होने पर जब आयु का बंध नरक का हुआ। उस समय आयु के जो

अपकर्षण थे वे आयु रूप परिवर्तित हो गये। आयु का घटना तो कभी भी हो सकता है परंतु आयु का बढ़ना अपकर्ष काल में ही होगा। गुरुदेव आर्जवसागरजी महाराज कहते हैं-

सद्दर्शन के पहले बाँधी, नरक आयु जिसने उसको।
दर्शन से भी सह क्यों न हो, मिले नपुंसक-पन उसको ॥172 ॥
लेकिन बद्धायुष्क सुदर्शी, पूर्वबद्ध उन कर्मों से।
पाय नरक वह निश्चित ही पर, प्रथम भूमि निज कर्मों से ॥
पहली पृथ्वी से ना नीचे, कभी सुदर्शी जाता है।
दुःख को सहता कर्मयोग से, धर्म-भावना भाता है ॥ 173 ॥[10]

यदि जीव ने सम्यग्दर्शन के पहले नरक आयु बाँधी है और बाद में उसे सम्यग्दर्शन हो जाता है तब भी वह नपुंसक ही होगा। क्योंकि नरक की प्रकृति ही ऐसी है वहाँ जो भी नारकी बनेगा वह नपुंसक ही होगा। परंतु एक व्यवस्था है वह है कि वह जीव नरक तो जायेगा, पर पहली पृथ्वी से आगे नहीं जायेगा। जो तीसरी, सातवीं पृथ्वी जा रहा था वह अब प्रथम पृथ्वी पर ही रहेगा। उसकी नरक की अवस्था में परिवर्तन होकर तीसरे से प्रथम पर पहुँचा, यह उत्कर्षण हुआ और आयु का अपकर्षण हुआ।

तिर्यञ्च आयु- यदि किसी जीव ने मिथ्यात्व में आयु का तिर्यञ्च का बन्ध किया। पश्चात् सम्यग्दर्शन हो गया तो वह पशु मरकर भोगभूमि में उत्पन्न होता है एवं नपुंसक और स्त्री का बंध होने पर भी सम्यग्दर्शन के पश्चात् पुरुष वेद मिलता है।

मनुष्य आयु- यदि किसी जीव ने मिथ्यात्व में आयु का मनुष्य का बन्ध किया। पश्चात् सम्यग्दर्शन हो गया तो वह मनुष्य मरकर भोगभूमि में उत्पन्न होता है एवं नपुंसक और स्त्री का बंध होने पर भी सम्यग्दर्शन के पश्चात् पुरुष वेद मिलता है।

सद्दर्शन से पहले जिसने, किया बंध वह नर, पशु का।
सद्दर्शन-सह भव मिलता है, भोगभूमि में नर, पशु का ॥
दर्श बिना जिस नर, पशु को वह, होय नपुंसक, स्त्री बंध।
सद्दर्शन से परिवर्तन हों, पुरुषवेद में दोनों बंध ॥ 174 ॥[11]

देवायु- सम्यग्दर्शन के बिना जिस मनुष्य या पशु ने भवनत्रिक की आयु बाँधी है, वह सम्यग्दर्शन होने पर वैमानिक आयु हो जाती है एवं सम्यग्दर्शन के पहले जिसने देवी की आयु बाँधी है वह सम्यग्दर्शन के होने पर देवों की हो जाती है।

दर्श बिना जिस नर, पशु ने हो, बाँधी भवनत्रिक आयुष।
सद्दर्शन के होने पर वह, बनती वैमानिक आयुष ॥
सद्दर्शन के पहले जिसने, देवी की बाँधी आयुष।
सद्दर्शन के होने पर वह, देवों की होवे आयुष ॥ 175 ॥

(देवों में बदले आयुष)

इस प्रकार से चारों गतियों में जीव के आयु का उत्कर्षण होता है। (नरक गति में जीव की आयु का अपकर्षण होता है लेकिन उसकी अवस्था का उत्कर्षण होता है) परंतु उसमें सम्यग्दर्शन का योग चाहिये सम्यग्दर्शन होने पर जीव का अपकर्षण और उत्कर्षण उपर्युक्त स्थितियों में होता है।

1. तीर्थोदयकाव्य/172
2. राजवार्तिक/27/3/191/24
3. गोम्मटसार कर्मकाण्ड/जीवप्ररूपणा/438/511/14
4.पंचसंग्रह/191/201, जैनसिद्धान्त कोश भाग प्रथम/पृष्ठ262
5.गोम्मटसार कर्मकाण्ड/346/498/11
6.गोम्मटसार कर्मकाण्ड/मूल/342/837
7.धवला/10/4, 2.4, 29/52/4
8.गोम्मटसार कर्मकाण्ड/जीवप्ररूपणा/438/511/14
9.तत्त्वार्थसूत्र/8/10
10.तीर्थोदय काव्य/172-173
11.तीर्थोदय काव्य/174

★★★

भाव विज्ञान परिवार के नवागत सदस्य

• **अशोक नगर :** श्री रवि जैन (मुनीमजी)इशागढ़ वाले • **भोपाल-शाहपुरा :** श्री सन्तोषकुमार जैन, श्री सुहागमल जैन, श्री राजेन्द्र कुमार जैन, कु. ओजस्वी जैन, डॉ. संजीव-डॉ. तृप्ती जैन, श्री मनोज जैन, श्री जैन अमित कुमार मोदी, श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, श्री अनीष जैन, श्री कमल कुमार जैन, श्री अशोक कुमार जैन, डॉ. सुधीर जैन(डिप्टी कमिश्नर), कर्रापुर/ भोपाल **(विशेष सदस्य)**।

गुरुवर का आशीष रहे जब।
दुख आते वे कभी न तब।।
गुरु के गुण वे शीघ्र ही आते।
दुर्गुण जब वे कभी न भाते।।

-गुरु आर्जव वाणी

पंजीयन / रजि-002/बी-113/2020-21

आर्जव तीर्थ एवं जीव संरक्षण ट्रस्ट, भोपाल के अंतर्गत

आचार्य आर्जवसागर शास्त्र प्रकाशन एवं संघ सेवा समिति 2023-24

शिरोमणि संरक्षक 100,000/- या अधिक, परमसंरक्षक 50,000/- या अधिक, संरक्षक रु. 21,000/- या अधिक, विशेष सत्-दान रु. 11,000/- या अधिक, सत्दान रु. 5,100/- या अधिक अथवा अपनी शक्ति के रूप में राशि समर्पित करने वाले श्रावकों के विवरण एकत्रित कर सम्मानीय नाम के रूप में भाव-विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित किये जायेंगे। दान राशि पर 80 जी प्रावधानों के अंतर्गत आयकर से छूट मिलेगी।

अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	मंत्री
राजेन्द्र जैन	**जयदीप जैन (मोनू)**	**प्रो.सुधीर जैन**
9425140653	9826340190	8839242707

दान राशि जमा कराने हेतु केनरा (Canara bank) बैंक डिटेल- आर्जव तीर्थ एवं जीव संरक्षण ट्रस्ट
अकाउंट नं. 11018767287 IFSC Code CNRB0005101 MICR CODE-462015022

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....निवासी... से **भाव विज्ञान पत्रिका** हेतु सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन सदस्यता रुपये 2,100/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पता :- ....

जिला .... प्रदेश ....पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर/ मोबाईल .... ई-मेल .... है।

दिनांक हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट:- ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर व रसीद प्राप्त कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

गुरु सान्निध्य में भव्य वृषभ यात्रा का आयोजन

दिनांक 2 दिसंबर 2023 को आचार्यश्री ससंघ के मंगल सान्निध्य में श्री शांतिनाथ त्रिकाल चौबीसी जिनालय में मंदिर जी की 32 वीं वर्षगांठ के रूप में भव्य वृषभ यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें प्रातः 7 बजे से सामूहिक अभिषेक, शांतिधारा, पूजन उपरांत आचार्य भगवन् की विशेष संगीतमय पूजन की गई तदुपरांत श्री विद्यासागर सर्वोदय दिगंबर जैन शांतिनाथ पाठशाला की वार्षिक रजत कलश स्थापना का कार्यक्रम भी किया गया। मंदिरजी में शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ भगवान की विशाल जिनप्रतिमाओं का महामस्तकाभिषेक किया गया। तदुपरांत आचार्य भगवन् की दिव्य देशना का लाभ भी प्राप्त हुआ। अंत में नगर में वृषभ रथ यात्रा निकाली गई।

तदुपरांत दिनांक 2 दिसंबर को दोपहर में पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य भगवंत ससंघ की मंगल अगवानी हुई। 2-3 दिन प्रवासोपरांत दिनांक 5 दिसंबर 2023 को आचार्यश्री ससंघ का अशोकनगर से थूबोनजी की ओर मंगल विहार हो गया। दिनांक 7 दिसंबर को प्रातःकाल ससंघ की भव्य मंगल अगवानी दर्शनोदय तीर्थ थूबोनजी में की गई जिसमें दर्शनोदय तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सभी पदाधिकारियों सहित अशोकनगर पंचायत कमेटी एवं अनेक भक्तों की उपस्थिति रही।

ऐलक दीक्षा स्थली थूबोन जी सहित पचराई, गोलाकोट, चन्देरी, खंदारगिरि क्षेत्र में रहा गुरुवर का अल्प प्रवास

दर्शनोदय तीर्थ क्षेत्र थूबोनजी में आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज की ऐलक दीक्षा आचार्य परमेष्ठी श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के करकमलों से सन् 1987 में संपन्न हुई थी। गुरुदेव ने क्षेत्र की वंदना के दौरान आचार्यश्री समक्ष के अनेक संस्मरण भी सुनाये। प्रतिदिन प्रातःकाल गुरुभक्ति एवं संघ स्वाध्याय उपरांत 9:00 बजे भगवान आदिनाथ बड़ेबाबा की गुरु मुख से बृहद् शांतिधारा संपन्न कराई गई एवं मांगलिक प्रवचन का लाभ भी भक्तों को प्राप्त हुआ। सायंकाल में गुरु भक्ति उपरांत आरती, भजन एवं गुरु मुख से अध्यात्म गीता का वाचन भी किया गया। इसी दौरान चन्देरी, ईसागढ़, खनियाँधाना, पचराई जी आदि से पधारी कमेटियों द्वारा गुरुसंघ समक्ष श्रीफल भेंट कर अपने-अपने नगर पधारने एवं शीतकालीन वाचना हेतु निवेदन किया गया। करीब 10 दिन प्रवासोपरांत दिनांक 15 दिसम्बर को आचार्यश्री ससंघ का मंगल विहार कदवाया, पचराई होते हुये खनियांधाना की ओर हो गया।

दिनांक 20 दिसम्बर 2023, बुधवार को प्रातःकाल की बेला में बैण्ड-बाजे के साथ बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक आचार्य भगवन ससंघ की भव्य मंगल अगवानी खनियांधाना में की गई। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर बड़े मंदिर जी में गुरुदेव मंचासीन हुये तदुपरांत गुरुदेव का पाद प्रक्षालन कर मंगलमय पूजन की गई एवं शीतकालीन प्रवास हेतु निवेदन भी किया गया। इसी दौरान आचार्य भगवन् के मंगल सान्निध्य में 26 दिसंबर को भक्तामर महामण्डल विधान एवं 27 दिसंबर को श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान का आयोजन भी किया गया। 21 से 30 दिसंबर 2023 तक श्री नेमिनाथ दिगंबर जैन नया मंदिर खनियांधाना में श्री सिद्धचक्र महामण्डल

विधान का आयोजन भी किया गया जिसमें आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ का प्रवचन सह मंगल अल्प सान्निध्य प्राप्त हुआ। विधान के अंतिम दिवस जिनेन्द्र भगवान की शोभायात्रा भी निकाली गई जिसमें क्षेत्र के लोकप्रिय **जनप्रतिनिधि पंजाब सिंह यादव** ने पधारकर गुरुदेव के समक्ष रात्रिभोजन त्याग का नियम लिया। इसी अवसर पर खनियांधाना में ग्वालियर नया बाजार मंदिर कमेटी के सदस्यों ने गुरु समक्ष श्रीफल भेंट कर ग्वालियर पधारने हेतु निवेदन किया। खनियांधाना में धर्मप्रभावना उपरांत दिनाँक 13 जनवरी 2024 को आचार्य ससंघ का विहार गोलाकोट (श्री दिगंबर जैन तीर्थोदय अतिशय क्षेत्र) की ओर हो गया। 15 जनवरी को आचार्यश्री आर्जवसगार जी महाराज ससंघ की अतिशय क्षेत्र गोलाकोट में मंगल अगवानी हुई। पश्चात् आचार्य भगवन् ससंघ ने अतिशयकारी भगवान श्री 1008 आदिनाथ जी की प्रतिमा सहित अन्य प्राचीन मूर्तियों के दर्शन कर अपने आप को धन्य किया। 3-4 दिन के अल्प प्रवासोपरांत गुरुदेव ससंघ का विहार बामोरकलां के लिये हो गया। 18 जनवरी 2024 को प्रातःकाल की शुभ पावन बेला में आचार्यश्री ससंघ का बड़े ही भक्ति भाव पूर्वक, बैण्ड-बाजों के साथ बामोरकलां में आगमन हुआ। गुरुदेव के मंगल प्रवचन उपरांत कमेटी द्वारा आचार्य भगवंत के श्रीचरणों में श्रीफल भेंट कर बामोरकलां में प्रवास हेतु निवेदन भी किया गया। आर्यिकाश्री अमूल्यमति माताजी ससंघ ने अगवानी कर दर्शन व चर्चा का पुण्यलाभ भी प्राप्त भी किया। करीब 15 दिन प्रवास में प्रतिदिन प्रवचन, स्वाध्याय एवं गुरुभक्ति उपरांत आरती, पाठशाला आदि का लाभ समाज जनों को प्राप्त हुआ। 3 फरवरी 2024 को गुरुदेव से दीक्षित आर्यिका श्री 105 प्रतिभामति माताजी ससंघ का भी गुरु दर्शनार्थ बामोरकलां में आगमन हुआ। आर्यिका ससंघ ने गुरुदेव की चरण वंदना कर प्रदक्षिणा की एवं गुरुदेव से रत्नत्रय एवं स्वास्थ कुशलता भी पूछी। तदुपरांत सायंकाल की बेला में आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ(5 पिच्छि) का मंगल विहार चन्देरी की ओर हो गया। 4 फरवरी 2024 को आचार्यश्री ससंघ का बड़े ही हर्षोल्लास के साथ, जनता-जनार्दन के साथ एवं बैण्ड-बाजों पूर्वक चन्देरी नगर में ऐतिहासिक मंगल आगमन हुआ। चन्देरी की प्रसिद्ध चौबीसी के दर्शन एवं भगवान अजितनाथ एवं अनेकों प्राचीन मूर्तियों का दर्शन बड़ा ही अनुपम है। गुरुवर ससंघ ने जिनालय स्थित सभी वेदियों में विराजमान जिन प्रतिमाओं के दर्शन किये तदुपरांत आचार्य भगवन् की दिव्य देशना सुनने का लाभ भी भक्तगणों को प्राप्त हुआ। प्रवचनोपरांत श्री दिगंबर जैन समाज कमेटी चंदेरी ने गुरुचरणों में श्रीफल भेंट कर खंदारगिरि में भगवान आदिनाथ के मोक्ष कल्याणक कार्यक्रम हेतु निवेदन किया। इस अवसर पर थूबोन जी में बड़ेबाबा आदिनाथ के समक्ष आयोजित श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान हेतु विधानकर्ता परिवार एवं थूबोनजी कमेटी द्वारा गुरु चरणों में श्रीफल भेंटकर निवेदन किया गया। दिनाँक 7 फरवरी 2024 को आचार्यश्री ससंघ का मंगल विहार चन्देरी से थूबोनजी की ओर हो गया। 8 फरवरी को प्रातःकाल गुरुवर ससंघ की आगवानी थूबोनजी में हुई। तदुपरांत भगवान आदिनाथ के मोक्ष कल्याणक दिवस के शुभ पावन अवसर पर गुरुदेव ससंघ के मंगल सान्निध्य में निर्वाण लाडू समर्पण किया गया। जिसमें थूबोन एवं अशोकनगर कमेटी के अध्यक्ष मंत्री आदि सहित गुवाहाटी, पिपरई, चन्देरी, ईसागढ़, दमोह आदि अनेक महानगरों से भक्तगणों को गुरुवाणी सुनने का लाभ भी प्राप्त हुआ। भगवान महावीर के 2550 वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में दिनाँक 11 फरवरी से 18 फरवरी 2024 तक थूबोनजी में भगवान आदिनाथ की

छत्रछाया एवं **गुरुदेव श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ** के मंगल सान्निध्य में तथा ब्र. अंकित भैया के निर्देशन में **श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान** का आयोजन किया गया। विधान पुण्यार्जन का सौभाग्य श्रीमान् ज्ञानीचंद जी, रमेशचन्द, नीरज जैन (कलेक्ट्रेट), आशीष जैन (न्यायालय), दीपक जैन इंदौर, समकित शास्त्री एवं समस्त कांसल परिवार (महिदपुर वाले) ईसागढ़ वालों को प्राप्त हुआ।

विधान के प्रथम दिवस-पंच ऋषिराजों के मंगल सान्निध्य में घटयात्रा एवं ध्वजारोहण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तदुपरांत इन्द्र प्रतिष्ठा, अभिषेक, शांतिधारा, पूजन भी (संगीतमय) सम्पन्न कराई गई। श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान के मध्य ही गुरुदेव ससंघ के दर्शनार्थ **विंग कमाण्डर वर्धमान अभिनंदन** के माता-पिता सहित अनेक लोग चैन्नई तमिलनाडु से पधारे एवं गुरुवर का मंगल आशीर्वाद पाकर स्वयं को धन्य किया।

10 वां आचार्य पदारोहण दिवस सानंद संपन्न

विधान के पंचम दिवस दर्शनोदय अतिशय क्षेत्र थुबोनजी में दिनांक 15 फरवरी 2024 (माघ शुक्ला षष्ठी) को आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज का 10 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस मनाया गया। जिसमें गुरुदेव का पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र दान भी किया गया। पश्चात् आचार्यश्री की विशेष संगीतमय पूजन भी की गई एवं आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में भाव विज्ञान पत्रिका के अंक का एवं लोक कल्याण महामण्डल विधान के नए संस्करण का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में गुरु गुणगाण कर गुरु की महिमा को भी बताया। इस अवसर पर आचार्यश्री के दर्शनार्थ **श्री आदेश जी जैन आई आर एस** भी पधारे। गुरुदेव का मंगल आशीर्वाद ग्रहण कर गुरु करकमलों से साहित्य भी प्राप्त किया।

दिनाँक 20 फरवरी 2024 को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की भावभीनी श्रद्धाञ्जलि / विनयांजलि उपरांत मुंगावली कमेटी द्वारा अपने नगर पधारने हेतु श्रीफल भेंट किये गये। दो दिन बाद पिपरई की ओर मंगल विहार हुआ। 2-3 दिन के प्रवास उपरांत आचार्य भगवंत श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ का मुंगावली के लिये मंगल विहार हो गया।

दिनाँक 23 फरवरी 2024 को प्रातःकाल आचार्य ससंघ की मुँगावली नगरी में भव्यातिभव्य अविस्मरणीय मंगल अगवानी की गई जिसमें सभी भक्तगण सम्मिलित हुये। आगवानी उपरांत आचार्यश्री ससंघ ने प्रभु-वंदना की । तदुपरांत आचार्य भगवन् के प्रवचन पूर्व मुँगावली नगर पंचायत कमेटी द्वारा गुरु चरणों में श्रीफल भेंट कर ग्रीष्मकालीन वाचना हेतु निवेदन किया। दिनाँक 23 मार्च 2024 को संपूर्ण देशभर में आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज की समाधि होने पर विनयाञ्जलि सभा का आयोजन किया गया। जिसके संदर्भ में आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में मुँगावली नगरी में भी विनयांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें सभी सम्प्रदाय के लोगों ने गुरुदेव के संदर्भ में अपना वक्तव्य प्रस्तु किया।

विनयांजलि सभा कार्यक्रम मे मल्लाहगढ़ से पधारे महंत राम युवराज ने भी गुरुदेव को और उनके तप-त्याग को अपनी वाणी से सभी को बताया एवं इसी अवसर पर सभा में उपस्थित एक मुसलमान अब्दुल करीम अंसारी ने भी अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की एवं आजीवन को माँस का त्याग किया। तदुपरांत सभा में

उपस्थित हजारों की संख्या में मौजूद जन समूह के बीच आचार्यश्री जी ने भी गुरुदेव के अनेकों संस्मरण सुनाकर गुरु उपकार को बताकर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिनाँक 3 मार्च 2024 को मुँगावली नगर स्थित विशाल भवन मे श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान का आयोजन किया गया जिसमें मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से भी भक्तगणों ने पधारकर पुण्यार्जन किया एवं भोपाल की ओर पधारने की भावना व्यक्त की।

3 मार्च 2024 को मुँगावली से गुरुदेव श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ का मंगल विहार अतिशय क्षेत्र भौंरासा होते हुये कुरवाई में 6-7 दिन और मण्डी बामोरा में तीन दिनों का प्रवास करते हुए बरेठ में अल्प प्रवासोपरांत कमेटी द्वारा अनेक बार निवेदन के उपरांत गंजबासौदा की ओर हुआ।

गुरु सह नगर गौरव का प्रथम बार नगर आगमन

दिनाँक 18 मार्च 2024 को आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ का भव्यातिभव्य मंगल प्रवेश गंजबासौदा में हुआ। आचार्य भगवन् संघ सह **मुनिश्री सानंदसागर जी महाराज** की यह पहली यात्रा और उपस्थिति गंजबासौदा वालों को प्राप्त हुई। गंजबासौदा में सभी श्रद्धालुओं को प्रातःकाल प्रवचन, दोपहर में स्वाध्याय एवं तत्त्व चर्चा तथा सायंकाल में गुरुभक्ति उपरांत बच्चों के लिये पाठशाला, शंका समाधान, प्रश्नमंच आदि का लाभ भी प्राप्त हुआ। करीब 15-20 दिन के गुरुसंघ के प्रवास का लाभ गंजबासौदा वासियों को प्राप्त हुआ।

सुख शांति कहाँ मिलती है?

आचार्य श्री आर्जवसागर जी

आचार्य श्री जी कहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक प्राणी हर एक कार्य के पीछे सुख शांति की चाहना करता है। सुख शांति आखिर कहां मिलती है? तो आचार्य श्री जी ने कहा कि अध्यात्म के क्षेत्र में प्रयास करने पर सफलता मिल सकती है। क्योंकि जहाँ पर सही मार्ग है तो मंजिल दूर नहीं होती। और अगर मार्ग छूट जाएगा तो मंजिल प्राप्त नहीं हो पाएगी।

वर्तमान में इसी धर्म मार्ग में सुख शांति है। वहाँ सुख का जितना अनुभव होता है वह अन्यत्र और कहीं नहीं होता। हमारे आचार्य कहते हैं कि बिंदु से संयुक्त ओम का ध्यान प्रतिदिन साधु लोग करते हैं; जो पुण्य को बढ़ाने वाला, इच्छित वस्तुओं का दाता और पाप कर्मों की निर्जरा कराता है। ऐसा वह पंच परमेष्ठी का वाचक ओम है ; जिसमें अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, और सर्व साधु समाहित हैं। मनुष्य गति ही एक ऐसी गति है जहाँ से पंचम गति मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है।

आचार्य श्री जी और भी कहते हैं कि आज जो तुम्हारे द्वारा धर्म किया जा रहा है वह तुम्हें इहलोक और परलोक.. दोनों में सुख शांति अवश्य प्रदान कराएगा। सच्चा सुख चाहते हो तो भगवान की भक्ति करते रहो और अपने जीवन में व्रत नियम संयम को धारण कर उनका अच्छे से पालन करो।

कुरवाई में आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के दर्शनार्थ पधारे एमएलए श्रीमान इं. मुकेश कुमार जी।

अशोकनगर पंचायत कमेटी द्वारा आयोजित थूबोन जी में विनयाञ्जलि सभा का पावन दृश्य।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की समाधि पर थूबोन जी बड़े बाबा मंदिर में आयोजित गुरुपूजन का दृश्य।

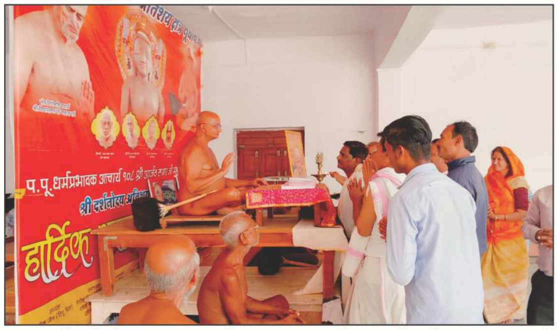

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की समाधि के उपलक्ष्य में थूबोन जी में आयोजित विनयांजलि सभा कर गुरुदेव से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए अध्यक्ष, मंत्री आदि कमेटीजन के सदस्य।

खनियांधाना में श्री नेमिनाथ दि. जैन नया मंदिर में सिद्धचक्र विधान हेतु गुरुचरणों में निवेदन करते हुए कमेटी जन।

खनियांधाना में आयोजित श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान में मंचासीन आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ।

गोलाकोट के अतिशयकारी भगवान आदिनाथ की स्तुति करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ।

मुँगावली में आयोजित श्री शांतिनाथ महामंडल विधान में मंचासीन आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ।

RNI रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

प्रति

मुँगावली में ग्रीष्मकालीन वाचना हेतु निवेदन करते हुये कमेटी के सदस्यगण।

गुरुवर आर्जवसागर जी ससंघ सान्निध्य में मुँगावली में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान।

समतापूर्वक समाधि के उपलक्ष्य में आयोजित भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि के दौरान आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ।

मुंगावली में आयोजित विधान के दौरान गुरुदेव का पाद प्रक्षालन करते हुए भक्तगण।

मुँगावली के अब्दुल करीम अंसारी ने गुरुचरणों में लिया आजीवन माँस त्याग का नियम।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के दर्शनार्थ मुँगावली पधारे महंत राम युवराज मल्लाहगढ़।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज के 11 वें आचार्य पदारोहण दिवस पर शास्त्र दान करते हुए श्रीमान राजेश जी जैन सपरिवार दमोह।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन मो.:9826240876 द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 7222963457, 9425601161